‘काव्यांजलि’

(नागर विमानन कार्मिकों की भावनाएं)

मंजिल यूँ ही नहीं मिलती राही को
जुनून सा दिल में जगाना पड़ता है!
पूछा चिड़िया से कि घोसला कैसे बनता है?
वो बोली कि तिनका तिनका उठाना पड़ता है!!

“हिंदी हमें
अपनी धरती और
संस्कृति से
जोड़ती है”

—राजभाषा विभाग

'काव्यांजलि'

(नागर विमानन कार्मिकों की भावनाएं)

मुख्य संरक्षक

डॉ. हरदीप एस पुरी

माननीय नागर विमानन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

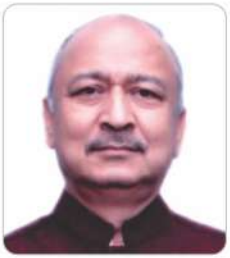

संरक्षक

प्रदीप सिंह खरोला

सचिव, नागर विमानन

मार्गदर्शन

सत्येन्द्र कुमार मिश्रा

संयुक्त सचिव, भारत सरकार

मार्गदर्शन

अंशुमाली रस्तोगी

संयुक्त सचिव, भारत सरकार

'काव्यांजलि'

(नागर विमानन कार्मिकों की भावनाएं)

संपादक
रमा वर्मा
संयुक्त निदेशक

सह–संपादक
राकेश मलिक
सहायक निदेशक

सहयोग:
श्री गजेन्द्र कुमार
सहायक अनुभाग अधिकारी

श्री विनय कुमार
आशुलिपिक

श्री रघुवीर सिंह
अधीक्षक (मानव संसाधन)

मोहम्मद उवैस
डाटा एंट्री ऑपरेटर

हरदीप एस पुरी
Hardeep S Puri

सत्यमेव जयते

आवासन और शहरी कार्य राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
नागर विमानन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State (IC), Housing & Urban Affairs
Minister of State (IC), Civil Aviation
Minister of State, Commerce & Industry
Government of India

संदेश

"जो ख्वाब देखते हैं आसमानों के
वो पंख भी ले आते हैं हौसलों के"

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, 2018–19 प्राप्त होने पर नागर विमानन मंत्रालय के समस्त कार्मिकों को हार्दिक बधाई। उन्नति पथ पर आगे बढ़ने के लिए मनुष्य में स्वाभिमान होना जरूरी है। राष्ट्रीय स्वाभिमान की बात करें तो सरकारी कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना जरूरी है। निरंतर प्रयास करने से मंजिल स्वयं पास आ जाती है। आकर्षक ढंग से तैयार की गई 'काव्यांजलि' का प्रत्येक पृष्ठ मंत्रालय के कार्मिकों की परिश्रमशीलता और संवेदनशीलता के साथ–साथ मार्गदर्शक अधिकारीगण के उत्साहपूर्ण प्रयासों का उदाहरण है। इसके लिए आप सभी प्रशंसा और सराहना के हकदार हैं। नागर विमानन मंत्रालय 'वसुधैव कुटंबकम' की परिकल्पना को साकार करते हुए मानव कल्याण और परस्पर सौहार्द की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। मैं मंत्रालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से आग्रह करता हूं कि वे मंत्रालय में भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन की दिशा में स्वेच्छा से और मन से प्रयास करें। आपके सभी प्रयास सफल हों और सभी के सपने साकार हों।

शुभकामनाएं।

एच एस पुरी

(हरदीप एस पुरी)

Office : Room No 291, Rajiv Gandhi Bhawan, Safdarjung Airport, New Delhi-110003.
Tel: 91-1124610350, 24632991, Fax : 91-11-24610354

प्रदीप सिंह खरोला
Pradeep Singh Kharola

सत्यमेव जयते

सचिव
भारत सरकार
नागर विमानन मंत्रालय
नई दिल्ली-110 003

SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CIVIL AVIATION
NEW DELHI-110 003

संदेश

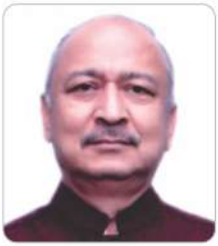

'संकल्प' एक ही काफी है,
मंजिल तक पहुंचने के लिए।

भाग–दौड़ भरी जिन्दगी में कुछ रचनात्मक कार्य करने से जीवन में नई ऊर्जा, नई स्फूर्ति का संचार होता है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ऐसे कुछ पल अवश्य आते हैं, जब विचारों की तुलना में भावनाएं प्रबल होती हैं। ऐसे पलों में भावनाओं का ज्वार, जब शब्दों के रूप में कागज पर उतरता है तो कविता बन जाता है और वह कविता, समाज के अन्य व्यक्तियों के लिए भी प्रेरणा–स्रोत बन जाती है। विषम परिस्थितियों में कवि की कुछ पंक्तियां, किसी के जीवन की राह को सुखद मोड़ प्रदान करने की सामर्थ्य रखती हैं। इसीलिए शब्द को 'ब्रह्म' की संज्ञा दी जाती है। इस परिकल्पना को साकार रूप देने के लिए मंत्रालय द्वारा, सभी कार्यालयों के कार्मिकों की रचनाओं को एकत्र कर, पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया था और आज 'काव्यांजलि' का प्रवेशांक देख कर मैं हर्षित हूं। सुरुचिपूर्ण तरीके से सजाई–संजोई गई 'काव्यांजलि' में जहां एक ओर हमारे कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा उजागर हो रही है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक सरोकारों के प्रति उनकी संवेदनशीलता आश्वस्त कर रही हैं कि हम स्वर्णिम भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं। मंत्रालय की राजभाषा टीम का यह प्रयास, निश्चित रूप से सराहनीय है। मैं कामना करता हूं कि 'काव्यांजलि' का अगला अंक और अधिक निखार के साथ सामने आएगा।

शुभकामनाओं सहित,

(प्रदीप सिंह खरोला)

Room No. 293, B-BLOCK, RAJIV GANDHI BHAWAN, SAFDARJUNG AIRPORT, NEW DELHI-110 003
TEL. : 011-24610358, FAX : 011-24602397 E-mail : secy.moca@nic.in

सत्येन्द्र कु. मिश्रा
संयुक्त सचिव
SATYENDRA K. MISHRA
JOINT SECRETARY

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
नागर विमानन मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CIVIL AVIATION

संदेश

**"हर काम की अपनी गरिमा है, और
हर काम को अपनी पूरी क्षमता से
करने मे ही संतोष मिलता है"**

भारतवर्ष को 'बिना खड्ग, बिना ढ़ाल' आजादी दिलाने वाले युगपुरुष सादगी की मिसाल थे। उनका जीवन खुली किताब था जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर अनमोल विचारों और फौलादी इरादों का ताना–बाना था। उनके हृदय में जीवमात्र के प्रति दया भाव था। उन्होंने मानवता का संदेश दिया, परिश्रम का महत्व समझाया और स्वच्छता का पाठ पढ़ाया। उनका शरीर दुर्बल दिखता था, लेकिन आत्मबल इतना सुदृढ़ था कि एक इशारे पर जनसैलाब उनके पीछे चल पड़ता था। महान भारतवर्ष के महात्मा जननायक ने स्थापित कर दिया था कि जन–जन की भाषा हिंदी भारत की राजभाषा है जो सभी भारतीय भाषाओं के प्रेम से सुवासित है। मंत्रालय और उसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों के कार्मिकों की कविताओं से सजी 'काव्यांजलि' को अपने सामने पा कर मैं आह्लादित हूं। इस प्रयास से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को उसके अथक परिश्रम के लिए साधुवाद। हम सब मिलकर राजभाषा का प्रयोग बढ़ाएं और देश को गौरवान्वित करें।

असीम शुभकामनाएं।

(सत्येन्द्र कुमार मिश्रा)

'बी' ब्लॉक, राजीव गाँधी भवन, सफदरजंग एयरपोर्ट, नई दिल्ली-110003
B-Block, Rajiv Gandhi Bhawan, Safdarjung Airport, New Delhi-110 003
टेली./Tel. : 91-11-24616303, फैक्स/Fax : 91-11-24628218, ई-मेल/E-mail : jsskm.moca@gov.in

अंशुमाली रस्तोगी
Angshumali Rastogi

संयुक्त सचिव
भारत सरकार
नागर विमानन मंत्रालय
नई दिल्ली-110 003

JOINT SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CIVIL AVIATION
NEW DELHI-110 003

संदेश

एक छोटा सा नियम बनाएं...
रोज कुछ अच्छा याद रखें,
और कुछ बुरा भूल जाएं...

ईश्वर ने मनुष्य को अपना प्रतिरूप बनाया है और उसे अपार शक्तियां प्रदान की हैं। शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक, ये तीनों प्रकार की शक्तियां प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान होती हैं। इन तीनों शक्तियों में ताल–मेल और संतुलन बनाकर चलने से मानव उन्नति पथ पर आगे बढ़ता जाता है। 'काव्यांजलि' में संकलित कविताओं में प्रतिभावान कार्मिकों ने विभिन्न विषयों पर विविध प्रकार से अपनी–अपनी भावनाओं को बहुत सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। कविताओं में मन की कोमल भावनाएं हैं, समाज में फैली कुरीतियों की ओर इशारा है, जिन्दगी के अनुभव हैं, आतंकवाद के प्रति गुस्सा है, राष्ट्र और राजभाषा के प्रति प्रेम है, पर्यावरण के प्रति जागरूकता है, वैचारिक द्वंद्व है, पुत्र और पुत्री को समान महत्व देने का आग्रह है, नारी शक्ति का सम्मान है, मां की महिमा है और पराक्रम का उद्घोष भी है। कविता के रूप में अपने भावों को व्यक्त करने वाले सभी कार्मिकों के प्रयासों की मैं मुक्त कंठ से सराहना करता हूं। 'काव्यांजलि' के निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(अंशुमाली रस्तोगी)

रमा वर्मा
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
RAMA VERMA
JOINT DIRECTOR (OL)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
नागर विमानन मंत्रालय
नई दिल्ली - 110 003
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CIVIL AVIATION
RAJIV GANDHI BHAWAN, SAFDARJUNG AIRPORT,
NEW DELHI - 110 003

संपादक की कलम से

सीढ़ियां उन्हें मुबारक हों, जिन्हें छत तक जाना है,
मेरी मंजिल तो आसमान है, रास्ता मुझे खुद बनाना है।

धरती मां की कोख में न जाने कितने बीज समाए हैं। अनुकूल समय आने पर ही उनमें अंकुर फूटता है। अंकुर फूटता है, तो ब्रह्मांड की सारी शक्तियां मिलजुलकर उस अंकुर के लालन–पालन और बनाव–सिंगार में लग जाती हैं। इसी तरह से मानव मन में असंख्य भावनाएं और संवेदनाएं समाहित हैं। जीवन पथ पर चलते–चलते जब कोई घटना मानव मन की संवेदनाओं से टकराती है तो उठने वाले भाव, कविता के रूप में कागज पर उतर आते हैं।

देव भूमि उत्तराखंड में प्रकृति के सानिध्य में पले–बढ़े, श्री प्रदीप सिंह खरोला, सचिव, नागर विमानन ने, मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में कुछ रचनात्मक कार्य करने का सुझाव दिया तो मंत्रालय के कार्मिकों द्वारा लिखी गई रचनाओं को एक संकलन के रूप में प्रकाशित किए जाने का निर्णय लिया गया। इसी क्रम में कार्मिकों की स्व–रचित कविताओं को मंच प्रदान करते हुए 'काव्यांजलि' नाम से एक काव्य–पाठ प्रतियोगिता भी आयोजित कर ली गई और प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी कार्मिकों की रचनाओं का संकलन करके तैयार की गई 'काव्यांजलि' को पुस्तिका के रूप में आपके हाथों में सौंपते हुए, मुझे अत्यंत आनंद का अनुभव हो रहा है। सुधी पाठकगण को, इस पुस्तक के माध्यम से, अपने साथी कार्मिकों की रचनाधर्मिता से रूबरू होने का अवसर मिलेगा।

'काव्यांजलि' जिस मनभावन स्वरूप में आपके हाथों में है, उसके लिए भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के वरिष्ठ अधिकारीगण श्री अनुज अग्रवाल, सदस्य मानव संसाधन, श्री जगदीश कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशक और श्री संजीव कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) के अमूल्य योगदान के लिए आभार।

कोटि–कोटि शुभकामनाओं सहित,

(रमा वर्मा)

राकेश कुमार मलिक
सहायक निदेशक (राजभाषा)
RAKESH KUMAR MALIK
ASSISTANT DIRECTOR (OL)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
नागर विमानन मंत्रालय
नई दिल्ली - 110 003
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CIVIL AVIATION
RAJIV GANDHI BHAWAN, SAFDARJUNG AIRPORT,
NEW DELHI - 110 003

सह–संपादक की कलम से

"जो निःशुल्क है,
वही सबसे ज्यादा कीमती है.....
नींद, शांति,
आनंद, हवा
पानी, प्रकाश,
और सबसे ज्यादा
हमारी सांसें....."

किसी सुरम्य प्राकृतिक उद्यान का सा अहसास कराने वाले परिवेश में अवस्थित नागर विमानन मंत्रालय में प्रतिदिन आना एक सुखद अनुभव है। इसके चारों ओर मौजूद विशाल छायादार वृक्ष, उन पर कलरव करते असंख्य पक्षी, हरे–भरे झुरमुटों के बीच आवाजाही करते और आकाश में बादल देख पंख फैला कर नृत्य करते मोर प्रत्येक आगंतुक को आनंदित कर देते हैं। इन्हीं के बीच, मंत्रालय की गतिविधियों के प्रभावी साक्ष्य के रूप में, स्वच्छ नील गगन में उड़ान भरते भारतीय विमान, कार्मिकों को उत्साह से भर देते हैं। 'काव्यांजलि' में हमारे सभी कार्यालयों के कार्मिकों की कविताएं रंग–बिरंगे फूलों की तरह अपनी महक बिखेर रहीं हैं। उम्मीद है मंत्रालय के मेरे सभी साथी, अपने सहकर्मियों की भावनाओं की काव्यात्मक अभिव्यक्ति से आनंद की अनुभूति करेंगे। 'काव्यांजलि' के अगले अंक के लिए रचनाओं का इंतजार रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

(राकेश कुमार मलिक)

अनुक्रमणिका

1.	जल समाधि	पवन मालवीय	11
2.	हम दे सकते थे	अमित कुमार	13
3.	हमारे प्यारे सेवानिवृत्त साथी	सुमित सोनी	14
4.	पत्थर पानी हो जाय	मुकेश चौधरी	15
5.	दहेज प्रथा	मोहिनी साव	16
6.	भागीरथ पुकारे भागीरथी	वरुण त्रिपाठी	17
7.	जल शक्ति है, जल ही जीवन है।	गजेन्द्र कुमार	18
8.	लाइफ कोच	दिनेश कुमार	19
9.	हिंदी	केवल कृष्ण	19
10.	धूप ले लो धूप	डॉ. प्रदीप कुमार	20
11.	तुम	रीता अरुण मलिक	21
12.	बचपन	पूजा अरोड़ा	22
13.	ये जिन्दगी बस प्यार है	प्रियलता जैन	23
14.	एक इच्छा	विनोद कुमार वर्मा	24
15.	बनते बिगड़ते मौसम जिन्दगी के	बिमल वर बड़ूनी	25
16.	जीवन के सूत्र	शिव शंकर मलिक	26
17.	तन्हाई	कमल किशोर आचार्य	27
18.	जो चला गया उसे भूल जा	संदीप कुमार	28
19.	उपासना	समीर कुमार कर	29
20.	भारत की परिभाषा हिंदी	अमित कुमार	30
21.	मुझे भी पंख दो मुझे भी उड़ना है	कुंजलता	31
22.	उड़ान (उड़े देश का आम नागरिक)	संदीप कुमार	32
23.	अन्याय	तनुश्री दत्ता	33
24.	नारी और नदी	मोहित जौहरी	34

अनुक्रमणिका

25.	आंतरिक युद्ध	वरुण त्रिपाठी	35
26.	हिंदी इक नया हिंदुस्तान	प्रतीक वाजपेई	36
27.	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	मनीषा तिवारी	36
28.	हवाई सफर	वंदना शर्मा	37
29.	हां मैं कुछ कुछ बदलने लगी हूं	तोषी पंत	38
30.	पराक्रम	मुंकुद बिहारी	39
31.	रीति	स्वीटी कटियार	40
32.	झांक रहे दूजों के भीतर	सुमित सोनी	41
33.	शस्य श्यामला हे धरणी	संजीव कुमार झा	42
34.	कुछ तो होगा हल, मेरे इस कश्मीर का	सचिन कुंडू	43
35.	हिन्दी की अभिलाषा	पंकज कुमार सिंह	44
36.	अंतर्मन का शंखनाद	होशियार सिंह	45
37.	वृंदावन की विधवा	श्रीमती प्रीति दक्ष	46
38.	हिंद राष्ट्र	जुगल किशोर अरोड़ा	48
39.	धर्म और कर्म	रमेश चन्द	49
40.	क्यूं रोज गोलियां चलती हैं	पद्मा राय	51
41.	बोलो आओगी तुम	कमल किशोर आचार्य	52
42.	मानवीय प्रेरणा	विश्वमित्र	53
43.	बागवान	ज्योतिका महाजन	54
44.	मां	धनन्जय शर्मा	55
45.	हवा में उड़ने के लिए	संदीप कुमार	57
46.	जादू	डॉ. प्रदीप कुमार	58
47.	अमर बलिदानी चंद्रशेखर आजाद	प्रीति वर्मा	60

जल समाधि

पछुआ निर्झर ढलता भास्कर
उच्छवास लिए बढ़े राम चरण
सरयू की रेती भावहीन
निर्भाव पलक रहे भाव झलक
अब सीता बिन क्यों रहे काय
सूना सब कुछ वैदेही बिन

यह राजमुकुट दैवत्व पूर्ण
निर्बन्धन का बन्धन उसमें
है गला रुंधा वह सहज मनुष
बरबस ही फट पड़े नयन
अभिसिंचित करके लोक–लाज
आदर्श रूप मर्यादा भर

बढ़ा कदम एक जल कांप उठा
वाटिका जनक में लहराया
सखियों संग जनकसुता देखी
पुष्पों की सुरभित लय में

फिर धनुष उठा सम जनक राज
बाजे गाजे संग नाचे थे

भर ऊष्मा सागर सदियों से
चित डोरी बंधकर नैनों से
क्षण गुजर रहे रीते रीते
कित ओर गई मेरी सीते
किस भांति कहें पल थे जीते
धरती अब भार लगे मीते

क्या थमा प्रेम की काया है
जीवन का मर्म समाया है।
कोई देव रूप कहां पाया है?
जग जाने राम रमाया है।
तन थाम पुरातन मन में भी
वह राम सकल जग जाया है।

सरयू कांपी कांपे बादल
फिर सीता का महका आंचल
वह राम मनुष तन धन्य हुआ
फिर सबल हो रहा मन चंचल।

संधान किया उसका जिस पल
हर्षित चतुरानन–हर निश्छल

सिया–राम समदर्शित हों
मन–बन्ध गन्ध सम विस्तारित
फिर कदम दूसरा आगे बढ़ा
हुए धन्य भाग रघुबीर मेरे
पर पाप महान छुपे कैसे
छवि दीख पड़ी उस शक्ति की
हर अवसर पूर्ण किए वादे
पर साथी, सरस, अनूप मधुर

गुरू से दीक्षा, आदर्श–पुत्र
उस युग भी मैं क्यू बिसराता
माताओं पितु का सकल ध्यान
भटका जो मेरे साथ सदा

वह आदिशक्ति मेरी सीता थी
वह सहज रूप विस्तार लिए
लीला ये मधुर जाने हर क्षण
हे राम सदा तुम जीते थे?

वन गमन साथ औ कष्ट सहे
वह सीता पार अपार सहित

बस यही भाव बरसे समतल
हर ठांव गूंजती यह करतल
सरयू लिपटी हरि–चरण कमल
अस्तित्व हो गया मेरा सफल
क्यूं होवे उर ये आज विकल
जुट जाते जिसमें हर संबल
थामा भी मन को हर ठौर सखि
क्यों छोड़ा मुझको इस पल।

आदर्श सदा हर काम किया
बरबस सीता का नाम लिया
वन गमन मान संधान किया
उसका कैसे अपमान किया?

सोचूँ कैसे क्या ध्यान किया
कब कैसे क्या सब जान लिया।
मन माने क्या गुणगान किया
क्या इसका भी अभिमान किया?

रघुबीर तेरा सम्मान किया
सन्यासिन रूप समान लिया

स्नेहरहित इन प्राणों के
जिस ऊष्मा से यह सांस चले

कित ओर गई कित धाम गई
कित अलकों से निहरूं साथ

जीवित छाया पकडूं कैसे
तितली भौंरे सब पूछ रहे

कहे सब अपराध हमारा था
कोरे आंगन मन सीते सा
यह हो न सके हर युग साथी
कहे प्रेम अलौकिक था हर स्वर

विस्मय में पड़ते देव सभी
सुंदर लीला बरबस प्रभु की

कल थल में पूर्ण सजगता थी
कण कण में सदा विराजित तो
यूं जल जल अजल हुआ जाता
वह ताल सकल मन थाम सका

अब होने का कोई बोध नहीं
उसमें मिलने का ध्यान किया

जीवन को कर विश्राम गई
सब कुछ कर मेरे नाम गई
वह कानन वन जहां सीता थी
उसमें क्या कमी विनीता थी

वह सहज मनुष कोई राम नहीं।
गहरा कोई स्थान नहीं
क्या सखि साधु अन्जान नहीं
ऐसे जग मेरा काम नहीं।

क्या पूर्ण हो चली राम कथा
क्यों बरसाये है आज व्यथा

अब जल में समा रहे हैं राम
फिर दिखते नीर विफल में राम
फिर चरण कमल रत सरयू ग्राम
जल जाते सब जिसमें निष्काम

हे अवध तुम्हारा पालक था
जन काज राज सर्वोच्च रहे
फिर उसका भला न देख सके
अब अवध दूर दुनिया न रहे
अब जाने होगा क्या आगे
बरसों में और सदियों में भी

कहने को दो प्राण सही
इस युग क्या हर युग में भी
यह प्रेम सदा अचराचर है।
यह प्रेम सदा अचराचर है।

जिसको सर्वोपरि मर्यादा
फिर उसके आगे कौन भला
सीते को क्यूं वैराग दिया
है उसने यह संकल्प लिया
तुम राम कहां अब पाओगे
भर उनकी याद समाओगे।

सीता और राम उजागर है
यह प्रेम सदा अचराचर है।

पवन मालवीय
उप निदेशक,
नागर विमानन महानिदेशालय

भगवान राम और सीता का पवित्र प्रेम 'प्रेम की मिसाल' है। आज लाखों साल बाद भी, भारत और लंका के बीच बना रामसेतु इसका गवाह है।

हम दे सकते थे

हम दे सकते थे उन कलियों को खिलने का मौका
हंसने मुस्कुराने और रोने का मौका
पर हमने दिया उन्हें एक जिस्म काटने का औजार
कुछ निर्मम राक्षसी प्रहार
बेइंतहा दर्द और अंतरिक्ष में विलीन होती एक गूंगी चीख

हम दे सकते थे उन नन्हे हाथों में कुछ कॉपी कुछ किताबें
एक बस्ता और एक रास्ता स्कूल का
पर हमने दिया उन्हें एक झाड़ू, कुछ बर्तन
एक तवा एक बेलन
और कुछ जली हुई उंगलियाँ

हम दे सकते थे उन्हें नियमों से आजादी
बंधनों से मुक्ति
और एक मौका उन्मुक्त उड़ान का
पर हमने दी उन्हें एक गठरी नियमों की
चुप रहने के नियम सिर झुकाने के नियम
बाहर निकलने के नियम कपड़े पहनने के नियम
और बंदिशें लगाते ऐसे अनेक नियम

हम दे सकते थे उन्हें फिर से एक मौका सजीव होने का
जीवन के उत्सव में शामिल होने का
पर हमने दिया उन्हें एक तोहफा सफेद कपड़ों का
एक ठप्पा मनहूसियत का
एक मजबूरी बेसहारा होने की
और वैधव्य की व्यथा कहती दो आँखें...

सुमित सोनी
सहायक अनुभाग अधिकारी (सतर्कता)

"मैं कली हूँ तुम्हारे घर की
मुझे क्यूं बढ़ने नहीं देते
चलता है तुम्हारा वंश मुझसे
मुझे क्यूं पढ़ने नहीं देते"।

हमारे प्यारे सेवानिवृत्त साथी

सैनिक सी है छवि तुम्हारी, लम्बी काठी, चौड़ा सीना
अधरों पर मुस्कान बिखेरे, तुम पारस का एक नमूना,
पर अब तुम साथ हमारा छोड़ चले। हम साथ तुम्हारे सदा रहे।

कर्मनिष्ठ, कर्तव्य परायण, सेवा की पहचान रहे तुम,
सदा ड्यूटी पर मुश्तैद रहे, आज इस ड्यूटी से मुख मोड़ चले,
तुम साथ हमारा छोड़ चले, हम साथ तुम्हारे सदा रहे।

कठिन परिस्थितियां जब भी आई,
तुम साथ हमारे सदा रहे,
आंधी और तूफान में भी, तुम दीपक सा रोशन करते रहे,
किंतु आज इन सबसे, तुम मुख मोड़ चले।
तुम साथ हमारा छोड़ चले
हम साथ तुम्हारे सदा रहे।

अमित कुमार
सुरक्षा अन्वेषण अधिकारी
वायुयान दुर्घटना अन्वेषण ब्यूरो

**"कोई रिश्ता नया या पुराना नहीं होता.....
जिन्दगी का हर पल सुहाना नहीं होता
जुदा होना तो किस्मत की बात है.....
पर जुदाई का मतलब भूलना नहीं होता"।**

पत्थर पानी हो जाय

बेकारी क्या चीज है, किसने दी बनाय।
हो बाहु में जोर तो, पत्थर पानी हो जाय।
बेकार फिरूं मैं, कहते हैं पढ़े लिखे कई लोग।
अनपढ़ जन सीधा करें, पांच सौ रुपये हर रोज।
छोटी सी यह जिन्दगी, दिन हैं इसके चार।
काम कोई भी कर लेना, फिरना मत बेकार।
थोड़े में संतोष कर, नहीं अधिक की आस।
आंखें होत खराब ज्यों, देखत अधिक उजास।
अफसर बाबू ना सही, बन जाना मजदूर।
ताकि अनधन को कभी, हों ना हम मजबूर।
ईश्वर ने दी शक्तियां, हमको अपरम्पार।
क्यों ताकें मुंह और का, क्यूँ हों फिर लाचार।
भरना पेट शरीर का चौपायों का काम।
मेहनत से लेकिन जो भरे, बस वो ही इंसान।

मुकेश चौधरी,
उप विमानन सुरक्षा अधिकारी (प्रशिक्षण शाखा)
नागर विमानन सुरक्षा ब्यूरो (मुख्यालय) नई दिल्ली

थोड़ी सी थकावट होगी, थोड़ी होगी परेशानी,
तब ही तो जाकर बनेगी, तेरी भी एक कहानी।

दहेज प्रथा

दहेज के बल पर दिखावटी शान दिखाने वाले
समाज को देखा है
पाई–पाई जुटाने वाले मजबूर पिता के
झुकते कांधे को देखा है
न जाने कितनी बेटियों का दिल तोड़ा है
इस दहेज की बोली ने
झूठी शानो–शौकत के बाजार में जुड़ते रिश्ते भी
टूटते देखा है
बेशक, कोई तो समझेगा इन
रिश्तों का मोल
बड़ा मुश्किल हो जाता है
खुद को संभालना
मानवता की बातें कर दुल्हन का सौदा करते
समाज को देखा है
ये कोई कल्पित रचना नहीं, जिंदगी का
अनुभव है साहब
अपनी ही आंखों से घटित होते,
इसी सभ्य समाज में देखा है।

मोहिनी साव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
नागर विमानन सुरक्षा ब्यूरो

"जब पैदा होती है बेटी, तो एक ही बात होती है जमाने में,
एक बाप लग जाता है तब से दिन रात कमाने में।
कि जैसे भी हो, दहेज तो कैसे न कैसे जुटाना है।

भागीरथ! पुकारे भागीरथी

द्रवित हो उठा मान आज देखकर, घिसटते उस माँ के कर्षण को
महाकाल शेखर पर कभी, शोभित थी उस आभूषण को
मटमैली मलिन्य हो गयी जो जग पाप विमोचनी थी
जीर्ण शीर्ण अनुत्तीर्ण हो गयी जो आर्यों की जननी थी।।

जिसके छीटों के पड़ने से, स्वयं ईश्वर पवित्र हो जाता
पर उसके गर्भ में छुपा वो मगर, नही शील हो पाता
बाह्य मैल को धोता मनुष्य, उसे सिर्फ बाह्य प्रेम दिखाता
नमन आचमन करके भी, वही उसे दूषित कर जाता।।

ऐसा बाह्य प्रेम ना चाहे गंगा, माँगे अपने सम्मान को
मातृ पद से प्रदत्त वो गंगा, माँगे उसी निष्ट अभिधान को।।

नमन इस गंगा को, जो पापियों को भी स्वर्ग सिधारती
सिंचित करे समृद्ध करे, हृदय भारत का यह पाटती
बोझित बेंडिट भागीरथी "भागीरथ! भागीरथ!" पुकारती
विमुक्त करे इसकी जल धारा, पुकारे ऐसा सारथी
शुद्ध करे निरवरुद्ध करे, ऐसा भागीरथ वो ताड़ती
प्रतिबद्ध हों कर्मठ हों, हम सब बनें भागीरथ भारती।।

वरुण त्रिपाठी
कनिष्ठ कार्यपालक विधि
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

- **गंदे हो गये सारे नदी और नाले, अब बनो इनके रखवाले।**
- **अपने अंदर यह जोश भरो, नदियों को अब साफ करो।**
- **नदियों की रक्षा है देश की सुरक्षा।**
- **नदी से है पानी की आस, नदी बचाने का करो प्रयास।**
- **बिना नदी जीवन बदहाली, नदी से आती है हरियाली।**

जल शक्ति है

जल शक्ति है, जल शक्ति है
जल ही जीवन है
जल नहीं तो जिन्दगी फिर कहां
जिन्दगी नहीं तो कहानी फिर कहां
जल शक्ति है, जल शक्ति है
जल ही जीवन है।
जल का अब मत करो दोहन
बिना जल कैसे जिएगा सोहन
जल शक्ति है, जल शक्ति है
जल ही जीवन है।
आखिर कब तक खर्च करोगे बेपरवाह होकर जल
अगर अब भी नहीं सोचा तो निश्चय होगा मरण
फिर किससे मांगोगे, जल की वो दो घूंट
तड़प–तड़प कर तन से प्राण जाएंगे छूट।
जल नहीं तो समुद्र नहीं, जल नहीं तो हिमालय नहीं
जल शक्ति है, जल शक्ति है
जल ही जीवन है।
जल बचाओ, जल बचाओ
यही हमारा नारा है।
जल का संरक्षण करो तभी देश हमारा है।

जय हिंद! जय भारत!

गजेन्द्र कुमार
सहायक अनुभाग अधिकारी
नागर विमानन मंत्रालय

जल को व्यर्थ गवाएंगे, तो प्यास कैसे बुझाएंगे।
स्वस्थ रहने के लिए योग करो और पानी का सदुपयोग करो।

लाइफ कोच

जीवन के बढ़ते तनावों ने, कुछ हरे पर, पुराने घावों ने,
एक नए कर्म को जन्म दिया, जिसे 'लाइफ कोच' का टर्म दिया।

कुछ धूर्त मित्रों के दावों ने, पीठ पर खंजर के घावों ने,
प्रेम के झूठे भावों ने, बखूबी षडयंत्रों का कर्म किया।

सोचा बचपन जो बीत गया, और यौवन में जो मीत गया,
उस दर्द पर पर्दा डालें हम, और नए मित्र बना लें हम।

मित्रों के भीतर घातों ने, हृदय पर पड़े आघातों ने,
टुकड़ों–टुकड़ों में तोड़ दिया, अस्तित्व को मेरे झकझोर दिया।

पर दृढ़–निश्चाय कर खड़ा हुआ, कटु अनुभवों से ही बड़ा हुआ,
अब झंझावात को पहचान गया, उन यारों को भी जान गया।

पर माफी पर उनकी मौन था, न जाने मैं अब कौन था,
मस्तिष्क पटल से विस्मृत थे, न जाने दुष्ट अब किस पथ थे।

'लाइफ कोच' अब अंतर्मन था, जीवन में अब न कोई गम था,
अब दुष्ट आस्तीन के सांप नहीं, कुछ मित्र नजर से आए थे।।

दिनेश कुमार
वरिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा)
भाविप्रा, राजीव गांधी भवन, नई दिल्ली

हिन्दी

हिन्दी बोलना नव पीढ़ी का बिल्कुल ऑउट ऑफ डेट है।
देश हमारा सब देशों से इसीलिए तो लेट है।
अपनी ही भाषा से जब तक हम सारे शर्माएंगें।
चाहे हो पचास या सौ साल आजादी के, हम गुलाम कहलाएंगे।

केवल कृष्ण

''मौका देने वाले को धोखा, और
धोखा देने वाले का मौका, कभी नहीं देना चाहिए''।

धूप ले लो धूप

धूप ले लो धूप
चुन्नू के लिए
मुन्नू के लिए
गोलू के लिए
मटोलू के लिए
धूप ले लो धूप

साहेबान यकीन कीजिए
इसमें बिलकुल भी मिलावट नहीं है
आपने कहा–धूल !!
न जी न
धूल तो बिलकुल भी नहीं है
यकीन न हो तो
हाथ लगाकर देखिए
तुरंत गर्म न हो जाए तो
पैसे वापिस

आपने कहा–धुंध, न जी न
धुंध तो बिलकुल भी नहीं है
यकीन न हो तो
चश्मा हटाकर देखिए
एकदम से साफ दिखेगा
न दिखे तो पैसे वापस

धूप ले लो धूप
अम्मा के लिए
दादा के लिए
साहब के लिए
मैडम के लिए

धूप ले लो धूप
एकदम खरा
यह दिल्ली की धूप नहीं है साहब
जो आपको चकमा देदे
जो आपको असली के बदले नकली दे दे
जो आपको साथ में प्रदूषण की खुराक दे दे

यकीन मानिए
यह अच्छी ब्रैंड की धूप है
बिलकुल गोवा टाइप
या बलकुल पोर्टब्लेयर टाइप

इस धूप में जादुई शक्ति बेशुमार है साहब
थोड़ी देर के दीदार से ही
हड्डियां मजबूत
पाचन शक्ति दुरुस्त
ब्लड प्रेशर हल्का

तो है न कमाल
चाहे कहीं भी
किसी भी खोह में रहिए
बस थोड़ी देर का साथ
और यह धूप चिकमिक टाइप
एहसास से भर देगा
तो देर किस बात की
लीजिए साहब
एकदम खरा
मिलावट रहित
ब्रैंडेड
ताजी धूप।

डॉ. प्रदीप कुमार
अनुवाद अधिकारी (राजभाषा)
नागर विमानन मंत्रालय

'प्रकृति हमारी सभी जरुरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध करवाती है, लेकिन हमारे लालच को पूरा करने के लिए नहीं'।

तुम

रिश्ते–नातों की दुनिया में
चारों तरफ अंधियारा है
ये जिन्दगी तो मेरी अपनी है
पर मेरी हर सांस पर अधिकार तुम्हारा है।

मैं सजती हूं तुम्हारे लिए
मैं संवरती हूं तुम्हारे लिए
बिखर जाती हूं तुम्हारे प्यार में
आलोकित होकर
यह यथार्थ! सच्चाई है।
या फिर कोई 'भ्रम' हमारा है।

मेरे गीत तुम्हारे लिए हैं
मेरे शब्द तुम्हारे लिए हैं
कहने को तो मेरे विचार बड़े स्वच्छंद हैं
पर लगता है जैसे मेरे हर शब्द पर
बस 'एकाधिकार' तुम्हारा है।

तुम ही मेरा आज हो
कल भी मेरा तुम ही हो
तुम ही मेरे सांसों में रचे बसे हो
तुम्हारा ये जन्म तो मेरे लिए हुआ है
पर मेरा तो 'आजनम' ही तुम्हारा है।

रीता अरुण मलिक
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
भाविप्रा, निगमित मुख्यालय

जिंदगी तो सभी के लिए एक रंगीन किताब है ....! फर्क बस इतना है कि, कोई हर पन्ने को दिल से पढ़ रहा है; और कोई दिल रखने के लिए पन्ने पलट रहा है। हर पल में प्यार है हर लम्हे में खुशी है....! खो दो तो यादें हैं, जी लो तो जिंदगी है।

बचपन

अतीत की एलबम में महकता बचपन
जो चन्दन के पालने से शुरू होता है
मखमली लिबास पहनता है
खुशबू से महकते कमरों में सोता है
हरे–भरे आंगनों में घूमता है
कीमती खिलौनों से खेलता है
दूध की खुशबू से महकता है
तभी तो
अतीत की बन्द एलबम में
हर लम्हा चहकता है
महकता है बचपन

अतीत की यादों में सिसकता बचपन
जो कूड़े के ढेर से शुरू होता है
चिथड़ों को लपेटता है
दुर्गंध से भरे झोपड़ों में सोता है
गन्दी सड़कों पर रेंगता है
कंकड़ पत्थर से खेलता है
बिलखता है रोटी के
चन्द टुकड़ों के लिए
तभी तो
अतीत के बन्द पन्नों में
हर लम्हा कसकता है
सिसकता है बचपन

पूजा अरोड़ा
सहायक प्रबंधक (प्रशासन)
एअर इंडिया मुख्यालय

हजारों सपने टूट कर, चकनाचूर होने के बाद भी
एक नया सपना देखने के हौसले का नाम जिन्दगी है।

ये जिन्दगी बस प्यार है

पतझड़ में हरे पात, वो उजली सी सर्द रात
अंगड़ाई लेते भोर, लब शांत, मन का शोर
पीपल की ठंडी छांव, बारिश में थमे पांव, चलो भीग भी लो

मैं से पहले तुम कहो ना, तुम से पहले हम की बात
चाहत यही तो जिंदगी, ये जिंदगी बस प्यार है, ये जिंदगी बस प्यार है।

यारों का जैसे संग, होली का पहला रंग,
संगत में बजता साज, छुप ना सके वो राज
बचपन का जैसे मीत, सावन का कोई गीत, चलो गुनगुना भी लो

नैन मेरे तेरे ख्वाब, ख्वाहिशों को बेनकाब
हसरत यही है जिन्दगी, ये जिंदगी बस प्यार है।

बालक सी मुस्कान, अंतहीन आसमान
ममता का स्थाई रूप, हिमशिखर पे जैसे धूप,
उलझन भरे हालात, जो रह गई लबों पे बात, चलो बोल भी दो।

तेरी मुस्कुराहटों में पा लेने दो जहां
फितरत यही तो जिंदगी, ये जिंदगी बस प्यार है, ये जिंदगी बस प्यार है।

सुबह का जैसे ख्वाब, चंचल ये बेहिसाब,
सच बोलते दो नैन, कोई थम गई सी रैन,
इस धुन पे खोले बाहें, पांव थिरकलेना चाहें, चलो झूम भी लो।

चंद्रमा की शांत चित पे, सूर्य करदे जैसे नूर,
बरकत यही तो जिंदगी, ये जिंदगी बस प्यार है, ये जिंदगी बस प्यार है।

चाहत का पा के साथ, मन समझा नयी बात
इस जिंदगी का सार, बसर दिलों में बसता प्यार
खुशियों की अब पनाह में, उड़ चलने की है चाह, पंख खोल भी दो।

है दिल से दिल की बात, ये है दिल से दिल की बात
बातें यही तो जिंदगी, ये जिंदगी बस प्यार है, ये जिंदगी बस प्यार है

प्रियलता जैन
अधिकारी (कार्मिक), एअर इंडिया

खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वा की धार
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार

एक इच्छा

एक इच्छा
इन दिनों
प्रबलता की सीमा पर है
ज्ञात करने हेतु
वह साध्य
जो
बिना मनोरथ
स्वामित्व दे
अथाह द्रव्य का।
क्षीण हो चला है
अभावों से
निकलकर
जीवन ऐश्वर्य का स्वप्न,
अपनाकर
परिश्रम का सरल मार्ग।
परिचित हूं
उन व्यक्तियों से
जो
रखते हैं यही विचार
परिश्रम को बनाकर
साधन
विफलता से
करते हैं दो चार।
सोचता हूं
क्यों न?
किसी मंदिर का
पुजारी बन जाऊं
या फिर द्रष्टा?
या ग्रहों व हस्तलकीरों
के मध्य संबंध का
विश्लेषणकर्ता?
मैं जानता हूं
साधने के लिए
लक्ष्य,
करना होगा
कुछ तर्कों का
सृजन।
तीक्ष्ण
करनी होगी
वाकपुटता
व
उदासीन अंतर्मन।
परंतु निश्चय ही
संभव है
परिश्रम से पलायन
द्रव्य की प्राप्ति
व
सम्मान का वरण।
तो फिर चलो,
किया जाए
भाग्यद्रष्टा बन कर
किसी की
महात्वाकांक्षा का
दोहन,
संभव बताकर
ईश्वर सानिध्य से
द्रुतमार्गीय, अप्रतिम
जीवनारोहन।
या फिर
किसी को,
असहाय परिस्थिति का
वांछनीय
समाधान सुझाया जाए
ईश्वर के हस्तक्षेप का
स्वयं को माध्यम बनाया जाए।
या तो
दी जाए
किसी धनाढ्य को
छद्म शुभ कार्य
की अनुभूति
उदारवादिता का
उपदेश देकर
इंगित करके
दान की पेटी
हर्ष
अपनी चरम सीमा पर है
ढूंढ़ निकालने पर
मार्ग
धन व सम्मान
प्राप्ति का बिना
परिश्रम
परंतु उद्वेलित है
अंतर्मन।
क्योंकि
द्रव्य प्राप्ति हर्ष से
अधिक कष्टदायी
आत्मिक अधोपतन,
गर्तानुभूति,
मूल्यों का पतन।
इसलिए अंततोगत्वा
अभावग्रसित
मैं श्रमिक
साध लूंगा
सामंजस्य
आत्मसंतोष से
परंतु
नहीं चाहिए
भोग विलास
मंदिर
दान
सम्मान
आत्मग्लानि.....।।

विनोद कुमार वर्मा
उप–मुख्य विमान अभियंता, एअर इंडिया, मुंबई

गोधन, गजधन, बाजिधन और रतन धन खान,
जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।

बनते बिगड़ते मौसम जिन्दगी के

कभी सुना है
सर्द कंपकपाती सुबह
घने कुहरे की बूदों से छन कर
गुमशुदा सूरज की
हलकी सी गुनगुनाहट को
जो चुपके से उम्मीद किरण सी
फुसफुसाती है कान में
तू कर
थोड़ा इंतजार और।
और फिर
बसंत की नयी कोपलों
और खिलखिलाते फूलों के तले
जब सतरंगी बन जाये जमीन
और स्वर्ण रश्मियां
करने लगें अठखेलियां
तो कौन झकझोर कर
अटके दिल को
लगता है समझाने कि ये भी नहीं
आखिरी बसंत
तू उठ
और चल
बस दो कदम और।
और फिर
गर्मियों के तपते दिन
जब खुद हवा
तोड़ने लगे दम
और सूरज बरसाने लगे
दर्द हजारों
तो दूर क्षितिज पर
बनता बिगड़ता
जलज एक
दे जाता है नसीहत
तू कर बस
थोड़ा इंतजार और।

और फिर
बारिश की बूदें
लगा कर मलहम
पुराने जख्मों पर
जब अंकुरित करने लगें
नयी हरियालियां

और हजार उम्मींदें
और बादलों की
लुक्का छिपी के बीच
इश्क पैदा करने लगे
एक भीगी सिहरन
तो टिपटिपाती रातों में
सुकून की नींद को
क्यूं छेड़ने लगती है

गड़गड़ाहट
कौंधती बिजलियों की
मानो करते हुए ऐलान
की ये भी नहीं
आखिरी सुकूनी रात
तू उठ और
चल कुछ कदम और।

बिमल वर बडूनी
महाप्रबंधक (उड़ान परिचालन), पवन हंस लिमिटेड

जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है,
वह अच्छा हो रहा है! जो होगा वह भी अच्छा ही होगा।
तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो?
तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया?
तुमने क्या पैदा किया, जो नष्ट हो गया?
तूमने जो लिया, यहीं से लिया!
जो दिया यहीं पर दिया!
जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का होगा!

जीवन के सूत्र

जीवन में आते हैं उतार–चढ़ाव फिर भी,
मंजिल की ओर डग बढ़ाना सीखना है।
और कुछ न हो सके तो बस,
आत्मविश्वास से निखरना सीखना है।

माना की जिंदगी नहीं,
गुलाब के फूलों की सेज।
पर बदनसीबी का रोना छोड़,
हिम्मत से चलना सीखना है।।

महज अपने लिए ही जीना,
इंसानियत नहीं पशुता है,
इसलिए दूसरों का भी,
उपकार करना सीखना है।

जीवन है अनमोल
करनी है इसकी हिफाजत।
न आए बदनामियों का साया,
इसे संवारना सीखना है।

हममें हैं मानवता का गुण समाहित,
इससे कभी न मुंह मोड़ेंगे।
मानव हैं हम,
मानवता का पथ प्रशस्त करना सीखना है।।

जिंदगी के इस सफर में,
मुश्किलों में भी साहस से बढ़ना सीखना है।
जिंदगी में अगर जाते हार कभी,
तो हार से भी सबक लेना सीखना है।
जीवन में आते हैं उतार–चढ़ाव फिर भी,
मंजिल की ओर सदा बढ़ना सीखना है।

शिव शंकर मलिक
रेल संरक्षा आयोग, दक्षिण पूर्व परिमण्डल, कोलकाता

जो मुस्करा रहा है उसे दर्द ने पाला होगा,
जो चल रहा है उसके पांव में छाला होगा,
बिना संघर्ष के इन्सान चमक नहीं सकता,
जो जलेगा उसी दिये में तो उजाला होगा।

तन्हाई

तन्हाई अब लिबास है मेरा,
उसकी याद चढ़ आती है इस पर कई बार,
मैं झाड़ देता हूं धूल की माफ़िक़।

भीगी है ये मेरे संग कई बार आसुंओ में,
कई बार उतारना पड़ा है इसको की,
गीलापन कुछ कम हो।

जकड़ लेता है कभी कभी ये लिबास मुझको,
ऊपर के कुछ बटन खोलने पड़ते है
कि साँस आये।

कई बार इसको बिछा के बिस्तर बनाया है,
अतीत की हंसी यादों को इस पर लेटकर कई बार बुलाया है।

दिन भर की भागदौड़ के बाद,
जब शाम आती है, यही मुझको लुभाती है,
यही मुझे रास आती है।

तन्हाई अब लिबास है मेरा।

कमल किशोर आचार्य,
अनुभाग अधिकारी, नागर विमानन महानिदेशालय

कभी तन्हाई महसूस हो आपको अपनी भरी हुई महफिल में
तो आना.....।
मेरी तन्हाई में देखना पूरी महफिल सजा के रखी है हमने
आपके लिए.....।

जो चला गया उसे भूल जा

जो चला गया उसे भूल जा
जो चल रहा उसे याद रख
जो छूट गया उसे छोड़ दे
जो जुड़ गया उसे साथ रख;

जो बस्तियां उजड़ गई
लेकिन फिर वह कहां बसी,
नई बस्तियों में घर बना
उसे जिंदा कर आबाद रख;

नई राह पकड़ नई राह बना
नई जिंदगी की शुरुआत कर,
जो चला गया उसे भूल जा
जो चल रहा उसे याद रख

वर्तमान सदैव नया रहता है
यह बात समझ यह याद रख,
इस पल में स्वेद–रक्त बहा
भविष्य का आधार रख;

जो चला गया उसे भूल जा
जो चल रहा उसे याद रख

संदीप कुमार
सहायक निदेशक, नागर विमानन मंत्रालय

बदल जाओ वक्त के साथ, या फिर वक्त बदलना सीखो।
मजबूरियों को मत कोसो, हर हाल में चलना सीखो।।

उपासना

संबंध जोड़ती है इष्ट से उपासना।
सामीप्य कराती है इष्ट से उपासना।।

बिजली से जुड़कर बल्ब ज्यों होता प्रकाशवान,
बिजली से जुड़कर उपकरण होते गतिमान।
वैसे प्राण फूंकती भक्त में उपासना।।

लेकिन हो बल्ब फ्यूज तो बिजली भी क्या करे।
हो उपकरण खराब तो कैसे कहो चले।
वैसे ही भावना बिना निष्फल उपासना।।
भावों से ओत–प्रोत हो उपासना करें।
तो इष्ट के सानिध्य में घनिष्ठता भरें।
फिर देखो कैसे रंग लाती है उपासना।।

यदि दयानिधि का दयाभाव जागने लगे।
दीनों के प्रति दीनबंधु सा हृदय रखे।
शुचिता, पवित्रता को बढ़ाती उपासना।।
भोजन की तरह नियमित उपासना होना।
जीवन के परिष्कार हेतु साधना होना।
फिर देखो चमत्कार दिखाती उपासना।।

समीर कुमार कर
रेल संरक्षा आयोग, पूर्वोत्तर परिमंडल, लखनऊ

सबसे करना प्रेम जगत में यही धर्म सच्चा है,
जो है जग में हीन पतित अति, उसको गले लगाओ।
जो है दीन दुखी व पीड़ित, उनको धीर बंधाओ,
जिन्हें न कोई त्राता जग में, उनको जा अपनाओ।
जो रोते हैं उन्हें हंसाओ, सबसे प्रेम जताओ, सब में प्रभु का रूप निहारो,
यही भाव अच्छा है, सबसे करना प्रेम जगत में यही धर्म सच्चा है।।

भारत की परिभाषा हिन्दी

हिन्दी की परिभाषा भारत
भारत की परिभाषा हिन्दी,
भारत देश की भाषा हिन्दी।।

आंखों को बंद कर के देखो,
अँधियारे की आशा हिन्दी,
हिन्दी की परिभाषा भारत
भारत की परिभाषा हिन्दी।।

संविधान में लिखा हुआ है,
हिन्द देश की भाषा हिन्दी,
आओ इस का मान बढ़ाएं ,
जन जन तक इसको पहुंचाए,
जन–मन की है आशा हिन्दी,
हिन्दी की परिभाषा भारत
भारत की परिभाषा हिन्दी।।

अंग्रेजों ने बहुत सताया,
मातृभूमि पर मिटने वाले,
मतवालों की, जंजीरों की भाषा हिन्दी,
और आजादी की आशा हिन्दी,
हिन्दी की परिभाषा भारत
भारत की परिभाषा हिन्दी।।

आधुनिकता के चौराहे पर,
अँग्रेजी के दुर्योधन ने, इसे आज खींच
लिया है,
तुम मूक बधिर मत बन कर बैठो,
चलो चलाएं चक्र सुदर्शन,
और रोकें हम ये दुर्योधन,
वरना अनर्थ हो जाएगा,
महाभारत खुद को दोहराएगा,
आओ हम सब इसको रोकें,
हिन्दी की परिभाषा भारत
भारत की परिभाषा हिन्दी।।

हिन्दी का हम मान बढ़ाएं।
हिन्दी को घर घर पहुंचाएं,
हिन्द देश की भाषा हिन्दी,
हिन्दी की परिभाषा भारत
भारत की परिभाषा हिन्दी।।

अमित कुमार,
सुरक्षा अन्वेषण अधिकारी,
विमान दुर्घटना अन्वेषण ब्यूरो, नई दिल्ली

"भारत और हिंदी एक दूसरे के पर्याय हैं, एक दूसरे में गुंथे हुए हैं। हिंदी भारत की आत्मा है। यह जन जन की भाषा है"।

मुझे भी पँख दो मुझे भी उड़ना है।

नारी हूँ मैं अबला नहीं
अपनी उड़ान खुद भर सकती हूँ मैं,
अपने पंखों से नए शिखर को छूना है
मुझे भी पँख दो मुझे भी उड़ना है।

घर आँगन को जो महकाए
घर संसार को जो बसाये
घर को अपने प्रेम से भर दे,
बेटी, बहू या माँ सब मैं ही हूँ
फिर मुझे क्यूँ दुनिया डराए,
मुझे भी पंख दो मुझे भी उड़ना है।

क्यूँ मुझे औरों से कम आंका है
क्यूँ मुझे बंदिशों में बांधा है,
आज ये न करो कल वो न करो
क्यूं मुझे ऐसे जीना है,
मुझे भी पंख दो मुझे भी उड़ना है।

मैं आज की नारी हूँ
हर पल खुद गिरती संभलती हूँ,
दुनिया को जीतने की है मुझमें क्षमता
फिर मुझे ऐसे क्यूँ जीना है,
मुझे भी पंख दो मुझे भी उड़ना है।

हर शिखर पे हैं हम
हर जंग को हमने जीता है,
घर बाहर का संतुलन हमने रखा है
कर सकती हूँ मैं सब कुछ,
मुझे भी पंख दो मुझे भी उड़ना है।

कुंज लता,
सहायक निदेशक,
विमान दुर्घटना अन्वेषण ब्यूरो, नई दिल्ली

स्वयं को पहचानने से अधिक कोई ज्ञान नहीं
और
क्षमा करने से बड़ा कोई दान नहीं।

उड़ान (उड़े देश का आम नागरिक)

देश का भविष्य देखो सँवरने लगा
आम आदमी है अब उड़ने लगा
जो चलता था हवाई चप्पलों में
वो हवाई उड़ान है अब भरने लगा...
देश का भविष्य देखो संवरने लगा

जो दूरी थी लंबी अपनों के बीच
जो दूरी थी लंबी अपनों के बीच
वो फासला है अब सिमटने लगा...
देश का भविष्य देखो संवरने लगा

ट्रेनों और बसों के धक्कों से दूर
बादलों पे उड़ान वो है भरने लगा
देश का भविष्य देखो संवरने लगा

मंजिल है अपनी चाँद–तारों के पार
मंजिल है अपनी चाँद–तारों के पार
भाग्य देश का है अब बदलने लगा
देश का भविष्य देखो संवरने लगा

देश में विमानन खूब तरक्की करे
देश में विमानन खूब तरक्की करे
है सबका आशीष मिलने लगा
देश का भविष्य देखो सँवरने लगा
आम आदमी है अब उड़ने लगा।

संदीप कुमार
सहायक निदेशक,
नागर विमानन मंत्रालय

हवाई जहाज जो प्रारंभ में केवल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का साधन मात्र था अब वह पर्यटन और वाणिज्य की दुनिया का भी सूत्रधार बन गया है।

अन्याय

वाल्मीकि जी ने नहीं किया था न्याय।
रामायण में क्यों नहीं उर्मिला भी प्रसिद्धि पाए?
सीता जी ने दिया बहुत बड़ा योगदान।
पर वाल्मीकि जी ने क्यों न देखा?
पति के बिना चौदह वर्ष का बलिदान।

सीता जी को तो मिला था श्रीराम जी का सहारा।
पर उर्मिला वहां थी अपने पति के बिना बेसहारा।
पति की चिंता करती हुई,
अपने दुख को छुपाती गई।

रोक न सकती थी वह अपने पति को।
तोड़ न सकती थी वह असमंजस की स्थिति को
हर एक क्षण वह शायद रोती।
अपने पति से मिलने के लिए तड़पती।

इतनी बड़ी थी उसकी कुर्बानी
फिर भी नहीं है रामायण में, उसकी कोई कहानी।
क्यों न सोचा गया इस नारी का त्याग,
क्या नहीं था, उसके हिस्से में, नारी का सौभाग्य?

मैं हूं वाल्मीकि जी के ख्यालों के खिलाफ खड़ी
होना चाहिए था न्याय उर्मिला के साथ भी।
क्या दुनिया की अदालत में है इसका जवाब?
कि क्यों न मिला उर्मिला को इंसाफ?

तनुश्री दत्ता
कनिष्ठ कार्यपालक (सी.पी.एम.एस), भा.वि.प्रा.

''पतिव्रता उर्मिला ने जीवन के चंचल पड़ाव में, अपने पति से दूर रहने पर भी लेश मात्र किसी और का ध्यान नहीं किया। यह उर्मिला का अखंड पति–धर्म था। यह उसकी अघोषित, अवर्णित, अचर्चित, महानता थी''।

नारी और नदी

क्या नदिया की आह सुनी है, या तट छूकर ही लौट गए तुम।
गोरी का अन्तर्मन झांका, या पट छूकर ही लौट गए तुम।

परत ऊपरी निर्मल कोमल, अंदर कितना द्वन्द्व घिरा है।
कलकल की ध्वनि मधुर है किंतु, उसमें कितना दर्द भरा है।
स्पर्श है सुन्दर, गन्ध है मधुमय, किन्तु फिर भी करुण स्वरा है।
क्या दुख की गहराई नापी, या हठ छूकर ही लौट गए तुम।

क्या नदिया की आह सुनी है, या तट छूकर ही लौट गए तुम।
गोरी का अन्तर्मन झांका, या पट छूकर ही लौट गए तुम।

उनको तुम कमजोर न समझो, अपनी सीमा में चलती है।
संस्कार जो जन्म प्राप्त है, उसकी आभा में पलती है।
नारी हो या नदी हो, दोनों, सदा वेदना में जलती हैं।
क्या ज्वाला का ताप है झेला, या लौ छूकर ही लौट गए तुम।

क्या नदिया की आह सुनी है, या तट छूकर ही लौट गए तुम।
गोरी का अन्तर्मन झांका, या पट छूकर ही लौट गए तुम।

यदि क्रोध में आ जाए तो, नारी काली बन जाती है।
नदी यदि सीमाएं तोड़े, महाविनाश को जन्माती है।

धैर्य बहुत है, अग्नि भी किन्तु, प्रचुर मात्रा में अंतर्मन में जलती है।
क्या उस यज्ञ में आहुति की है, या जप लेकर ही लौट गए तुम।

क्या नदिया की आह सुनी है, या तट छूकर ही लौट गए तुम।
गोरी का अन्तर्मन झांका, या पट छूकर ही लौट गए तुम।

मोहित जौहरी,
तकनीकी सहायक, तकनीकी विंग
रेल संरक्षा आयोग लखनऊ

"नारी ने सीखा नदी से, बहना, मौसम के हर वार को सहना, क्योंकि नदी बहने के साथ–साथ सिखाती है–गतिशील रहना। नदी नहीं सिखाती–भंवर में फंसना, वह तो सिखाती है भंवर से उबरना"।

आंतरिक युद्ध

अशक्त नहीं है पथिक यहाँ पर
बहुत चला है यह सत्पथ पर
पर अंततः हुआ ये विचलित मन
त्यागने चाहे अब यह अनुसरण

इन विषादों में
इन अवसादों में
इन प्रतिकार के स्वादों में
इन निरर्थक विवादों में
निराशा का आंध जब आता है
यह जीवन ही कुरुक्षेत्र बनाता है
हम सबमें एक अर्जुन जगाता है
यह जीवन ही कुरुक्षेत्र बनाता है
हम सब में एक अर्जुन जगाता है
जीवन के इस दोराहे पर
प्रौढ़ता के इस चौराहे पर
पथिक कुछ देर को बैठ गया
उस भगवन से भी ऐंठ गया
करे बैठकर यह चिन्तन
करूँ कौन सी राह चयन
प्रश्न उठाता स्वयं से
उत्तर माँगता काष्ठ चित्र के भगवन से
प्रकट मुखौटे का विष देखकर
कुंठित हृदयों का तृष्ण देखकर
कोटि कोटि यहाँ भरा पाखंड
कभी खुद का शत्रु बने स्वयं
इन सबके बीच घिरा,
लड़ता जा रहा यह एकलमन
एकल जीवन

एकल हुआ जन्म तेरा
एकल ही होगा तेरा मरण
अनंता के इस युद्ध में
हुआ पराजित फिर यह मन
अंत में क्लान्तित होकर
सर्वथा सर्वस्व थक हारकर
करे आवाहित हे भगवन
हे कृष्ण नहि उद्घोषित होगा
अब मुझसे यह धनुष वर्ण
निरविरोधित होगा मुझ पर
हर आक्रमण
नहीं युद्ध स्थिर रह पाऊंगा
छोड़ूँगा मैं अब यह रण
हे सारथी, हे भगवन
छोड़ा तुमने भी तो रण
नदी का वेग जब आता है
लोहे का बाँध भी टूट जाता है

नहीं सुन सके और बोल
पड़े भगवन
जो जायगा तू छोड़ यह रण
धिक्कारेगी धरती
चीखेगा यह नील गगन

समस्त वसुधा है कुटुम्ब तेरी
हर कंकड़ में छाया मेरी
इस सत असत के कुरुक्षेत्र में
इस नरक क्षेत्र में
इस धर्म क्षेत्र में
यहाँ खूब हैं डाकू सिद्धभेष में
क्यूँ पड़ा इस धरा के राग द्वेष में

सिर्फ कर्म तेरा अधिकार है
फल देना मेरा कार्य है
यह जग जागता है मुझमें
यह जग मुझी में सोता है
इस फुलवारी का इस पतझड़ का
आदि अंत मुझी में होता है
जो आसक्ति मुझमें लगाता है
इस कुरुक्षेत्र से तर जाता है
कर कर्म, हर कर्म अलौकिक कर
हर कर्म तू मुझ पर समर्पित कर
असीम शक्ति संबोधित कर
उठा धनुष इसे सुशोभित कर
साध शत्रु पर अपना धनुष वर्ण
फिर चाहे हो जीवन चाहे मरण
जब ग्लान धरम पर आता है
सिर्फ वीरों को ही जगाता है
निश्चय कर मन में ठान ले
धर्म रक्षा को यह प्राण दे
धर्म रक्षा को यह प्राण दे
जो सत्य कर्म का करता है
वो काल से भी नहीं डरता है
यह धनुष ले, यह बाण ले
धर्म रक्षा को यह प्राण दे
यह युद्ध है, खेत नहीं
यहाँ पाप पुण्य का भेद सही
इस रण में गर तू जीत गया
दिग्घोषित तेरा वर्चस्व होगा
जयकारें होंगे तीन पहर
दसदिश तेरा सर्वस्व होगा

वरुण त्रिपाठी,
कनिष्ठ कार्यपालक (विधि), भा.वि.प्रा.

"कर्मों से ही पहचान होती है इंसानों की, दुनिया में अच्छे कपड़े तो बेजुबान बुतों को भी पहनाए जाते हैं दुकानों में, अतः कर्म किए बिना कोई भी इंसान कुछ नहीं हो सकता, अतः हमें अनवरत कर्म करते रहना चाहिए"।

हिंदी इक नया हिंदुस्तान

हिंदी इक नया हिंदुस्तान है।
हिंदी आन है, हिंदी मान है।
हिंदी हिंद की धरती है।
हिंदी हिन्द का आसमान है।
यही तो वाणी सुधा है।
यही तो अमृत ज्ञान है।
हिंदी आज है, हिंदी कल है।
हिंदी से ही हिन्द सफल है।

प्रतीक वाजपेई
अनुभाग अधिकारी

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

मां, कोख में मुझको मत मारो
पापा, मुझको जी लेने दो
अपने आंगन की बगिया में
एक फूल नया खिल लेने दो
जब हँसूंगी मैं, तो आंगन में
फूल तेरे खिल जाएंगे
मेरी भीगी पलकें होने पर
सारे घर वाले रोएंगे
तू डांटेगी तो डांट तेरी
मैं हंस करके सब सह लूंगी
पर तेरे दामन पर मैं कभी
दाग न कोई लगने दूंगी
मैं पढ़ लिखकर इस दुनिया में
नाम बहुत कमाऊंगी
गर आई मैं इस दुनिया में
तो सुख से घर भर जाऊंगी

सिर उठाकर चलोगे तुम पापा,
मेरे दुनिया में आने से,
मुझे पढ़ा लिखा कर तुम पापा
करना विदा अपने घर से
फिर होगी जब विदाई मेरी
आंखों में आंसू मत लाना
मैं सह न सकूंगी इस सबको
भारी होगा मेरा जाना
सब मरते हैं बेटे के लिए
कि वो वंश आगे बढ़ाएगा
पर हर मुश्किल में कठिनाई में
मैं ढाल तेरी बन जाऊंगी
जब सांझ ढ़लेगी जीवन की
मैं तब लाठी बन जाऊंगी
मां, कोख में मुझको मत मारो
मैं जीवन पार लगाऊंगी।

मनीषा तिवारी
पवन हंस लिमिटेड

हिंदी भाषा नहीं भावों की अभिव्यक्ति है,
यह मातृभूमि पर मर मिटने की भक्ति है।

हवाई सफर

सुदूर क्षितिज, नीला अम्बर
उन्मुक्त पंछी, देख मचल गये,
संकल्प किया, असंभव था।
बिन पंख का इंसान उड़ने लगा।

अचंभा था, रोमांचक था,
आविष्कार नया आकर्षक था,
कुछ भय था मिला, जाना ही था,
हवाई सफर अब आम हुआ।।

है सफर अनोखा आसमाँ का,
महाग्रंथ वर्णित वायुयानों सा,
कोसों को दूरी पूरी कर,
पल भर में रास्ता नाप लिया।

एक नया सवेरा खोज लिया,
मजबूत बसेरा जमा दिया,
सर्वस्व में जय जयकार हुई,
फिर भी अपनों की कसक चुभी।

है सफर अनोखा आसमाँ का,
बिन पंख का इंसान उड़ने लगा।

उम्मीद भरा, कुछ दर्द छुपा,
अवाम अड्डे पर जमा हुआ।
हर इंसान का था लक्ष्य अलग,
उड़ान सेवा के लिए एकत्र।

जब आन पड़ी संकट की घड़ी,
एअर इंडिया ने ही पहल करी,
अनजान असहाय देशवासियों की,
देश विदेश में डट के मदद करी।

निर्माण हुए हवाई पथ,
डगर अब कोई असंभव नहीं,
मानव इतिहास को दिया नया रुख,
दुनिया की सीमा सिमट गयी।।

बिन पंख का इंसान उड़ने लगा।
हवाई सेवा का आरंभ हुआ।।

प्रयाग की उर्वर भूमि से,
डाक के लिए पहला विमान उड़ा।
एअर इंडिया का निर्माण करके,
जमशेदजी ने देश को रत्न दिया।

एक सदी से ऊपर बीत गई,
व्यवसाय नये की झड़ी लगी,
पर्यटन का भी जरिया यही,
व्यापार वाणिज्य की नींव नई।

व्यवसाय का दौर अनिश्चित है,
क्षितिज अभी धुंधला क्यों हुआ है?
उड़ने की मुराद अब दिल में है,
फिर सेवाएं कुछ पंखहीन क्यों हैं

आओ मिल जुल के एक प्रण करें,
देश विदेश को परस्पर जोड़ते चलें,
विमान सेवाओं की उड़ान के पंख,
आज फिर से हम मजबूत करें।।

है सफर अनोखा आसमाँ का,
बिन पंख इंसान की उड़ान बचा।
बिन पंख इंसान की उड़ान बचा।

वंदना शर्मा,
उप महाप्रबंधक, वाणिज्य, एअर इंडिया

"हवाई जहाज जो प्रारंभ में केवल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का साधन मात्र था, अब वह पर्यटन और वाणिज्य की दुनिया का भी सूत्रधार बन गया है।"

हां मैं कुछ कुछ बदलने लगी हूं

मैं आजकल खुद से मिलने लगी हूं,
खुद ही खुद से बातें करने लगी हूं,
हां मैं कुछ कुछ बदलने लगी हूं।

वो बेचैन से हैं देखकर मुझको ऐसे
उम्मीद उनसे बदल क्यों गई है
थामी है उंगली जबसे मैंने अपनी
लोगों के हाथ छुरी से लगने लगे हैं
हां मैं कुछ कुछ बदलने लगी हूं।

ये पल पल बदलते रंग रूप अपना
गिरगिट के रंग कम लगने लगे हैं
चीनी भी कुछ फीकी है शायद
चाशनी भरी बातें जबसे समझने लगी हूं
हां मैं कुछ कुछ बदलने लगी हूं।

घर का घी तो बरबाद ही है
चिकनी चुपड़ी बातें जबसे सुनने लगी हूं
हां मैं कुछ कुछ बदलने लगी हूं।

चेहरे पर मुखौटे लगाए हैं सबने
वो परतें निकले चेहरे पढ़ने लगी हूं
हां मैं कुछ कुछ बदलने लगी हूं।

लोग कहते हैं मुझको, क्यों चुप सी हूं मैं
मैं खुद ही खुद में सिमटने लगी हूं
हां मैं कुछ कुछ बदलने लगी हूं।

उम्र का शायद अब असर हो रहा है
मैं कविता में जिंदगी अपनी लिखने लगी हूं
हां मैं कुछ कुछ बदलने लगी हूं।

तोषी पंत
अधीक्षक (मा.सं.), भा.वि.प्रा.

**"मुखौटे के पीछे असली चेहरों को पढ़ने लगी हूं,
जिंदगी की और समाज की सच्चाई को जानने लगी हूं"।**

पराक्रम

सजल भरे हैं नेत्र देख, भाग्य की ये लेख देख
देख देख देख देख सामने संरेख देख

माथे की लकीर कोई चीर कर चला गया
सामने ही आंखों के कश्मीर वो चुरा गया

भाई भाई भाई भाई तेरे मुख के बोल थे
बोल गोल गोल उनके मन में छुपे झोल थे

उदारता है नहीं उत्कृष्ट होने का पर्याय
शत्रु का संहार कर वीरों को मिलता है न्याय

स्वर्ण मुकुट की शोभा तब जब सूरमाओं के सर पर हो
वो नर नहीं जो जंग घड़ी खर्राटा खींचता घर पर हो

रक्त युक्त नस नस से जब जब लुप्त जोश हो जाता है
सुप्त शत्रुओं के अंग अंग में फिर से होश आ जाता है

श्रृंगार का समय समाप्त सुस्त सुस्त मत रहो
प्रेम का अब कर के त्याग, मुक्त मुक्त तुम रहो।

जाग उठ के भाग अब कि काल की पहर है ये
काट काट काट किसका सर और किसका धड़ है ये

कटकटाये दांत और थरथराये देह जब
शत्रु का संहार कर जीत की लहर है ये

दृश्य कर विचित्र चित्र शत्रुओं का याद कर
शौर्य से तू शस्त्र से सब शत्रुओं का श्राद्ध कर
धीरे धीरे धैर्य से धरा से उसको ध्वस्त कर
पसलियां पेचीदगी से तोड़ उसको पस्त कर

मंत्र यंत्र तंत्र जो भी लगे वो झोक दे
है नहीं षडयंत्र कोई आज तुमको रोक दे
किस कंठ में हैं क्रोध जो कि आज तुमको टोक दे
उठ न सके फिर जो गिरे कुछ ऐसा वज्र चोट दे

आग की लपटों का तेरी जिह्वा से उदगार हो
प्रतिशोध का घोड़ा खड़ा तू पीठ पे सवार हो
हाथ में तलवार ले तू शत्रु का कर सामना
आर हो या पार हो और सिंह की दहाड़ हो

जयघोष में मदहोश हो रे जोश के पर्याय तुम
हुंकार कर दे जोर से ऊं नमः शिवाय तुम
रौद्र रौद्र रूप कर प्रचंड अग्नि धूप कर
ये देश है तुझसे बना इस देश के सहाय तुम

वीरता वरदान है यूं ही इसे न नष्ट कर
सुख त्याद कर भोले मनुज कुछ देशहित में कष्ट कर।
चांद न आदर्श तेरा सूर्य ही आराध्य हो
बाहुबल और ओज से खुद को रे स्पष्ट कर

उठ रही हैं उंगलियां सवाल पर पुरुषार्थ के
बढ़ गयी चुनौतियां ये रूप हैं यथार्थ के
विलास भोग छोड़ कर नवीन कुछ प्रयास कर
पापियों का काट कंठ काज कर पुरुषार्थ के

फूँक इतनी तेज कर कि आग लाज से जले
मस्तक पे तेज देख आंखें शत्रुओं की न खुलें
हुंकार कर दहाड़ कर जा दौड़ जा पहाड़ पर
रे मर मिटो इसके लिए इस देश में बढ़े पले

मुकुंद बिहारी
नागर विमानन महानिदेशालय

पाक–अधिकृत कश्मीर, जम्मू–कश्मीर का वह हिस्सा है जिस पर पाकिस्तान ने अधिकार कर लिया था। कवि ने बड़ी सुंदर पंक्तियों में अपने गुस्से को व्यक्त किया है कि किसी भी कीमत पर हमें अपना कश्मीर वापस चाहिए।

रीति

ऐसी बरसी भूमि पर
काली बदरी की धार
कोरा बचा नहीं कोई
भीगा सारा संसार
काश दिव्य दिनकर निकले
ले कुरीत का कीचड़ सोख
वर्तमान तू ही कुछ बोल ।।1।।

रीति की उंगली थामे मानव
भूला परिवर्तन की चाह
आज भी मानव चला जा रहा
वही पुरानी राह
गतिरोधक बन बैठ राह में
संविधान के नियम बटोर
वर्तमान तू ही कुछ बोल।। 2।।

युगों–युगों से दबी हुई है
जगह–जगह जो चिनगारी
यदा–कदा ज्वाला बन जाती
आहुति हो जाती नारी
फिर भी नारी मौन रही
मांगा नहीं इसने मुंह खोल
वर्तमान तू ही कुछ बोल ।। 3 ।।

किया कुठाराघात रीति ने
नारी पथ से विचलित हो गई
निज हाथों से निज अंकुर का
अनचाहे ही हनन कर रही
भ्रूण हत्या का इस जहान में
किंचित कारण दिखे न और
वर्तमान तू ही कुछ बोल।। 4।।

क्यूं बोझ धरा पर है बेटी
नैनों मे करूणा के मोती
अब भी बिखरा है मान यहां
है बेटों सा सम्मान कहां
तुम हो जीवन के नवप्रभात
अब सुखद चलाओ तुम बयार
बेटियों का मान समेटो तुम
सम्मान सहित उठ भेटो तुम
कहदे अतीत अब मौन तोड़
वर्तमान तू ही कुछ बोल।। 5 ।।

स्वीटी कटियार
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

**इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है,
क्यों कि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी हैं.....।**

झांक रहे दूजों के भीतर

झांक रहे दूजों के भीतर
अपने भीतर झांके कौन

तुम ही मेरे दुःख का कारण
तुम ही मेरे क्रोध का कारण
उंगली रहती सदा दूजों पर
इसे खुद की तरफ मोड़े कौन
झांक रहे दूजों के भीतर
अपने भीतर झांकें कौन

अपनी प्रशंसा सबको है भाती
कमी कभी कोई नजर न आती
गलती दिखती सदा दूजों में
यहां अपनी मैल उतारे कौन
झांक रहे दूजों के भीतर
अपने भीतर झांके कौन

इसे बदल दो यह ठीक नहीं है
उसे बदल दो वह ठीक नहीं है
कहते हैं पूरी दुनिया बदल दो
पर खुद बदले ही जग बदलेगा
यह मन में बात उतारे कौन
झांक रहे दूजों के भीतर
अपने भीतर झांके कौन

सुमित सोनी
सहायक अनुभाग अधिकारी (सतर्कता), नागर विमान मंत्रालय

"कितनी विडंबना है कि अपने भीतर तो वह भी नहीं झांक रहे जो रात दिन ईश्वर का जाप कर रहे हैं। गंगा में जाकर भी हम स्नान क्रिया से अपना शरीर तो धो आते हैं पर आत्मा जस की तस रह जाती है। हमारी आराधना का सार यही है कि हमें भीतर झांकना आ जाए"।

बुरा जो देखन में चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो तन देखा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

शस्य श्यामला हे धरणी

शस्य श्यामला हे धरणी तू, करती हो पालन सबका।
क्षुधा मिटाती, तृप्त करे तू, प्राणदायिनी तू जग का।।

शस्य श्यामला हे धरणी तू, करती हो पालन सबका।
सब देवों से देवी गुणी तू, सब जीवों की प्राण वायु तू।
तूने देखे युग–युगान्तर, सबसे है दीर्घायु तू।।
तेरे ही आंचल में समर्पित, सारा अमृतजल नभ का।।
क्षुधा मिटाती, तृप्त करे तू, प्राणदायिनी तू जग का।
शस्य श्यामला हे धरणी तू, करती हो पालन सबका।।

रत्नों के भंडार समाहित गर्भ लिए है ज्वाला तू।
हो मातृशक्ति, अन्नपूर्णा भी, कभी कभी कराला तू।।
कभी कुपित हो डोले तो, त्राहिमाम जगे सबका।
क्षुधा मिटाती, तृप्त करे तू, प्राणदायिनी तू जग का।
शस्य श्यामला हे धरणी तू, करती हो पालन सबका।।

तप्त जले तू, शीत सहे तू, अधरों से कुछ भी न कहे तू।
रोज छीन तेरी हरियाली, सागर सम सुशान्त रहे तू।।
अपने ही हाथों से बिगड़े, अगली पीढ़ी अपने कल का।
क्षुधा मिटाती, तृप्त करे तू, प्राणदायिनी तू जग का।
शस्य श्यामला हे धरणी तू, करती हो पालन सबका।।

संजीव कुमार झा
पर्यवेक्षक (मानव संसाधन), भा.वि.प्रा.

**"हमारी धरती मां जीवनदायिनी है, अन्नपूर्णा है,
हमारी प्राण शक्ति का आधार है, धरती मां को कोटि–कोटि नमन"**

कुछ तो होगा हल, मेरे इस कश्मीर का

कुछ तो होगा हल, मेरे इस कश्मीर का,
उस सुन्दर घाटी, हिमालय के उस नीर का,
बहुत हुआ अपमान भारत माँ के चीर का
देंगे मुंह तोड़ जवाब पाकिस्तान के उस तीर का
क्योंकि हर हिंदुस्तानी है कश्मीर का,

वहां हैं कुछ ऐसे लोग
आतंकी को लगाते भोग,
सेना पर वो हाथ उठाएं
फिर भी जवान सब सहता जाए
लेना होगा बदला रांझे की उस हीर का
कुछ तो होगा हल, मेरे इस कश्मीर का,

आँख के बदले आँख,
इससे होगी दुनिया अंधी
सिर के बदले सिर,
हमारी सोच नहीं इतनी गन्दी,
क्या, नहीं हो सकता कुछ
वहाँ की फूटी तकदीर का
कुछ तो होगा हल, मेरे इस कश्मीर का,

बातचीत से अब कुछ नहीं होगा
लगता है बस अब लड़ना होगा,
अब नहीं सहेंगे मनमानी
पाकिस्तान को है धूल चटानी
पूरा राज्य तो क्या,
हम एक सेब नहीं देंगे कश्मीर का
कुछ तो होगा हल, मेरे इस कश्मीर का,
कुछ तो होगा हल, मेरे इस कश्मीर का,

सचिन कुंडू (एमटीएस)
नागर विमानन महानिदेशालय

कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है।
कश्मीर की वादी उथल–पुथल के दौर से गुजर रही है।।

हिन्दी की अभिलाषा

अधिकांश भारतीय की मैं संबल
युग–वर्ष बाद भी हूं विकल।
संघर्ष ही जीवन की कथा रही
क्या कहूं आज जो नहीं कही।
वर्षों बीत गए फिर भी,
वह मुकाम हिन्दी को मिल न सका
दूसरी ओर अंग्रेजी रहा,
जिसे बोलने में भारतीय नहीं थका।
गुलामी की जंजीर तोड़, भारत हुआ आजाद
पर तोड़ न सका अंग्रेजी की जंजीर,
जिससे हिन्दी न हो पाई आबाद।
बने बहुत आयोग, हुआ बहुत सुधार
फिर भी हिन्दी का न हो पाया उद्धार।
फंसी हुई है आज हिन्दी, राजनीति में बेबस
याद आती है यह सभी को, जब आता है हिन्दी दिवस।
चंद लोगों ने भर दिया है इसमें क्षेत्रीयता का रंग
जिससे लड़ रही हिन्दी सम्पूर्ण भारतीयता की जंग।
तड़पती हुई यह कहती है, मुझे न बनाओ ऐसी पहेली
मैं तो बनना चाहती हूं, कश्मीर से कन्याकुमारी की सहेली।
होगी जय, होगी जय, हे हिन्दी भाषा
आज नहीं तो कल, पूरी होगी तेरी यह अभिलाषा।

पंकज कुमार सिंह
नागर विमानन मंत्रालय

"केंद्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों की पहल के साथ कई सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाएं हिंदी का, एक लिंक भाषा के रूप में प्रसार के लिए कार्य कर रही हैं।
हिंदी भाषी आबादी का बड़ा भाग विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक आकर्षक बाजार बनता है और इस बाजार का लाभ उठाने के लिए लोगों को हिंदी भाषा से परिचित होने की आवश्यकता है।"

अंतर्मन का शंखनाद

हे पथिक! तुझे चलना होगा..
हे पथिक! तुझे चलना होगा..
है राह नहीं आसान तेरी
कुछ अधिक श्रम करना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

यह जीवन है आराम नहीं
थक जाना तेरा काम नहीं
तू साहस कर तू आगे बढ़
यह कर्म तुझे करना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

इन उबड़–खाबड़ रास्तों पर
तू लक्ष्य साध कर चलता चल
तू भटक न अपनी मंजिल से
तुझे भाव यही धरना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

तू कर्मवीर बन, कर्मठ बन
तू अंतर्मन की कथनी सुन
यहां कोई नहीं है साथ तेरे
गिर कर खुद ही उठना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

गर तेरा कुछ संकल्प नहीं
फिर तेरे पास विकल्प नहीं
तू आलस–निद्रा में सोया है
तुझे अभी–अभी जगना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

तुझको अवरोध बुलाएंगे
लालच देंगे, फुसलाएंगे
तुझे कर्म में अपने निष्ठा रख–
अवरोधों को छलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

हां, अंतर्मन की आवाज हूं मैं
जब कोई नहीं, तब पास हूं मैं
तू किस दुविधा में बैठा है
इस दुविधा को तजना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

जो ठहर गया, वो ठहर गया
जो चलता है। वह जीवित है
अपने पैरों के छालों का
खुद घाव तुझे भरना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

विजयी तुझे गर होना है
जीवन–पथ के संग्रामों में
हर–हाल तुझे इस जीवन के
अनुशासन में ढलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

घनघोर अंधेरा छाया है
चहूं ओर तेरे इक माया है
इन अंधकारमयी राहों पर
तुझे दीपक–सा जलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

हूं शंखनाद, उद्घोष हूं मैं
हूं निर्विकार, निर्दोष मैं
मैं अंतर्मन की शक्ति हूं
मेरे साथ तुझे मिलना होगा
हे पथिक! तुझे चलना होगा

होशियार सिंह
एअर इंडिया लिमिटेड, मुख्यालय

**"जीवन पथ की बाधाओं में तुझे लड़ना होगा, चलना होगा,
बढ़ना होगा आगे तुझको, सिर्फ तुझे बढ़ना होगा"।**

वृन्दावन की विधवा

वृन्दावन की तंग गलियों में
टपकती हुई छत के नीचे
पांच फुट की खोली में
मैं वृन्दावन की विधवा
हर सुबह समेटती हूं ऊर्जाओं के बण्डल
और हर शाम होने से पहले
छितरा दिया जाता है उन्हें
कभा परायों के
तो कभी तथाकथित अपनों के हाथों....

कई कई बार तो
भरनी चाही उड़ान
'परों से नहीं हौंसले से उड़ान है' सुनकर
पर ना तो असली थे पर
और न हौसले काम आये
एक अदृश्य सूली पे खुद को चढ़ा पाया
हौंसले के परों को बंधे पाया
फिर भी हर बार अपने लहु–लुहान
हौसले लिए
खुद को बांके बिहारी के मंदिर पे
लोगो के आगे पैसे, कपडे, खाने के लिए
खुद को गिड़गिड़ाते पाया

सूनी हथेली और सूने कान लिए
माथे पे चन्दन का टीका लगाये
निकल पड़ती हूं रोज दो वक्त की
रोटी के लिए
मुझे यहां मेरे ही अपनों ने पहुंचाया
मेरा परलोक सुधारने को
पर मेरा ये लोक
लोगों के सामने हाथ फेलाते
लोगों की गालियां खाते
नरक बन गया

यहां लोग आते हैं गाय को
चारा खिलाते हैं अपना पुण्य कमाते हैं
इंसान को दुत्कारते हैं
उस कान्हा को छप्पन भोग खिलाते हैं
जिसके घर अन्न के भण्डार भरे हैं
जो पूरे जग को खिलाता है

संवेदनाहीन इस समाज में
किसको दोष दूं?

जिस जीव में अपने शरीर
का खून पिला के जान डाली
जिसके भविष्य के लिए
अपनी हर पूंजी लुटा दी
पति की आखरी निशानी
सोने के दो कंगन और कान के दो बुंदे
आशीर्वाद कह बेटी और बहू को दे डाली
उन्होंने ही मुझसे जन्मों की दूरी
बना डाली

जिन बच्चों को उंगली पकड़ के
चलना सिखाया खाना सिखाया
आज उन्होंने बूढ़ी विधवा माँ को

दो जून रोटी और तन ढकने
को कपड़े देने का फर्ज नहीं निभाया

जिन्हें जरा सी चोट लगने पे
मैं धरती आसमान एक कर देती थी
आज मेरे घाव पे मक्खियाँ
बैठती हैं और दवा कर सकूं
इतनी मेरी औकात नहीं

फिर भी बद्दुआ नहीं देती उनको
वृन्दावन आ के पता चला
की सब अपने कर्मों का फल
इसी जन्म में पाते हैं
मैं उन्हें जन्म देने की सजा पा रही हूं
पर वो औलाद पैदा करने की
सजा न पाएं
यही दुआ किये जा रही हूं

दिन गिड़गिड़ाते हैं और
रात निःशब्द है

मेरा असल वजूद आज भी
वृन्दावन की
तंग गलियों में ही सिमटा है

यूं तो यहाँ सैंकड़ों मंदिरों की दीवारों पर
टंगी तस्वीरों और मूर्तियों पे
मेरे हाथों में तीर है... तलवार है...
त्रिशूल है
पर हकीकत में
सिर्फ भीख मांगने का पात्र है

सच है कि शायद डंके की चोट पर मैं
कह न पांऊ
कानाफूसी से सही पर हर कान तक
अपनी बात पहुंचाऊंगी
इस धरती को मैंने अपने अर्पण से रचा है
उस परमात्मा को मैंने अपने रक्त से
सींचा है
यह संसार मेरे जीवन बलिदान के
कारण बना है,
ईश्वर तक पहुंचने की मैं
एकमात्र सवारी हूं
हां मैं नारी हूं..... पर हारी नहीं हूं,
सिर्फ और सिर्फ दर्द की अधिकारी
नहीं हूं।।।।

श्रीमती प्रीति दक्ष,
अधिकारी (वित्त)
एअर इंडिया लिमिटेड. (पालम)

"कोई भी समाज हो, स्त्री का विधवा होना एक दयनीय दृष्टि से देखा जाता है। उसके बच्चे जिन्हें वह अपना पेट काटकर पालती है, वही उसे वृद्धाश्रम या तीर्थ स्थल पर छोड़ कर आ जाते हैं, जहां पर वह अपनी आजीविका का निर्वाहन भीख मांगकर करती है परंतु अपने बच्चों का बुरा तब भी नहीं सोचती"।

हिन्द राष्ट्र

भारतीय भाग्य, का गौरव
हिन्द राष्ट्र
यह देश हमारा प्यारा।

जग को प्रकाशित कर रहा,
यह पूर्व से चमकता सितारा,
भारतीय भाग्य का गौरव,
हिन्द राष्ट्र
यह देश हमारा प्यारा।

विश्व को चिर शान्तिदायक,
शास्त्र ज्ञान दिया महान,
और दे दिया संदेश यह संसार को,
वसुधैव कुटुंबकम सर्वरा सम्मान,
वेद पुराण और व्यास के,
ज्ञान का किया प्रचार प्रसार,
भारतीय भाग्य का गौरव,
हिन्द राष्ट्र
यह देश हमारा प्यारा।

पंचशील सिद्धांत मैत्री से,
जगत को हमने दिया निमंत्रण,
आण्विक परीक्षण कर हमने,
क्षमता का किया प्रदर्शन,
समभाव मैत्री भाव से,
किया विश्व को न्यारा,
भारतीय भाग्य का गौरव,
हिन्द राष्ट्र
यह देश हमारा प्यारा।

अंतरराष्ट्रीय मंच से,
योग सहयोग और संयम के,
भाव का होता सम्प्रेषण,
किन्तु आतंकित और देशद्रोह गतिविधियों का,
होता सर्वापेक्षण,
शांति स्वप्न संजोए रहे हम,
चलें लेकर सबका सहारा,

भारतीय भाग्य का गौरव,
हिन्द राष्ट्र
यह देश हमारा प्यारा।

पुस्तकों में उल्लिखित,
सत्यमेव जयते,
सच ही तो है,

जीत सत्य में ही तो है,
गांधी जी के सत्य अहिंसा का,
सिद्धांत प्रसारित होगा,
एक दिन भारत विश्व शांति में,
सर्वोपरि अंकित होगा,
हम सदैव अग्रसर होंगे,
यह है विश्वास हमारा,
भारतीय भाग्य का गौरव,
हिन्द राष्ट्र
यह देश हमारा प्यारा।

गंगा, यमुना, कावेरी और सतलुज,
जल का जाल बनाती है, पूरे भारत को,
शांति, स्नेह, प्रेम, एकता का मृदुल जलपान
कराती है, असमिया, उड़िया, तमिल, तेलुगु,
मलयालम हो या हो मराठी, पंजाबी, कश्मीरी,
गुजराती, सिंधी या फिर अपनी हिंदी,

एक ही भाव राष्ट्रगान का,
सब को संदेश सुनाता है,
हम सब एक थे और एक ही रहेंगे,
यह पहचान कराता है,

यह धरा है शरणस्थली,
औदार्य है आभूषण हमारा,
भारतीय भाग्य का गौरव,
हिन्द राष्ट्र
यह देश हमारा प्यारा।

जुगल किशोर अरोड़ा,
अधिकारी, वाणिज्य

"भारत सिर्फ एक शब्द ही नहीं है, अपितु प्रत्येक भारतीय के दिल की आवाज है। हमारी जन्मभूमि भारत स्वर्ग से भी बढ़कर है, यह विविधता में एकता का देश है। भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है"।

धर्म और कर्म

सभी संप्रदायों के दीपक
जलते जलते
जब कभी
पहुंचते हैं
समन्वय की मेज पर
तो न जाने क्यों
स्थिति हास्यास्पद हो जाती है
वक्ताओं का लक्ष्य
उस मेज पर
प्रतिस्पर्धा तक ही
सीमित क्यों रह जाता है।

धर्म की न्यायिक और
कोमल आस्थाएं
कहां लुप्त हो जाती हैं।

क्यों रह जाते हैं
केवल फूलते फूटते
वक्ताओं के विचार बुलबुले

क्यों प्रज्वलित होती है
दीपकों के प्रकाश से
भयंकर धर्मान्धता

भेदभाव और भ्रम
के वार्तालाप में
जीवित जड़ता
पर धर्म नहीं
धर्म कहीं लुप्त हो जाता है
हमें आज जरूरत है
धर्म के दर्शन की
धर्म के विश्लेषण की
धर्म के सत्य की
धर्म की सही परिभाषा की

धर्म मात्र एक प्रश्न नहीं
धर्म तो
ज्ञान का क्षितिज है
धरती की पराकाष्ठा है
एक कोमल और पोषक
विचार है

धर्म मानवता का आधार है
धर्म मानव सभ्यता में
एक वृक्ष की तरह है
मूल में एक
शाखाओं में अनेक
धर्म में, मूल क्या है

प्रकृति से प्यार, व्यवहार में
हृदय की उदारता
शरीर और मन का
अटल अनुशासन
और सत्य का संग
परिवार समाज
और संस्कृति का संवर्धन
विश्व संप्रदायों में
वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का प्रवाह
और आवश्यकता है
एक और सत्य
वह है स्वयं मानव। हाँ
मानव और उसका संरक्षण

धर्म मानवता का विधान है
मानवता ही धर्म है।

जन जन के जीवन में
क्षणक्षण का प्रयोग
वास्तव में
मनोनीत है

कर्म की धर्मिता
बुरा या भला
कर्ता के लिए
सर्वदा मनोनीत है
कर्म छोटा या बड़ा
भ्रम का विषय नहीं
सृजन है तो कर्म है
कर्म सब एकसा है
क्षमता कर्ता में होती है और उपयोगिता
निर्णायक होती है

कर्म तो समय के साथ
चल रही जीवन
विकास प्रक्रिया में
कर्म आपके अस्तित्व की
धरा है
सफलता कर्म का प्रभाव है
कर्मयोगी इसी सत्य की राख को
मंडित कर जाता है।

न दोष दो
न रोष लो
कर्म करो
कर्म सहज है
कर्म मनोनीत है
कर्म गीता का उद्‌गार है
जीवन की अभिव्यक्ति है।
ज्ञान का सार है।
समृद्धि का स्त्रोत है
सृष्टि का पर्याय है
और हां
कर्म मनोनीत है

सृजन से सज्जन है
निष्कर्म विनाश है
दुष्कर्म पाप है
चाहते क्या आप हैं
अकर्मण्यता, आपको, आपसे छीनकर
समृद्धि की पंक्ति में
सबसे पीछे खड़े रहने को

मजबूर कर देती है।

बाहर के दुश्मनों से
लड़ने की जरूरत ही नहीं
अपने अन्दर के
दुश्मनों को पहचानो
उनसे युद्ध करो
कर्म पर कृष्ण भाष्य लो
और चलते रहो
कृष्ण भाष्य धर्म से प्रेरित नहीं
मानवधर्म से प्रेरित है
इसी धरा का है
और जन जन के लिए है।

कर्म की विवेचना करो
उसे देश से जोड़ो
समृद्धि के लिए समाज से जोड़ो
आशीर्वाद के लिए माता पिता से जोड़ो
प्यार के लिए परिवार से जोड़ो
कर्म मनोनीत है। कर्म मनोनीत है।

रमेश चन्द
वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

"धर्म और कर्म में केवल एक ही अंतर है धर्म मुक्त करता है जबकि कर्म बंधन पैदा करता है। किसी भी हालत में आपको कर्म तो करना ही है। अब आपको यह देखना है कि आप अपने आप को फंसाने के लिए कर्म कर रहे हैं या मुक्त करने के लिए।"

क्यूँ रोज गोलियां चलती हैं

(धर्म की आड़ मे होने वाले दंगों के प्रति मेरे मन की आवाज)

क्यूँ रोज गोलियां चलती हैं
बिन मौत क्यों जानें जाती हैं
कितनी मांगें रोज उजड़ती हैं
कितनी बिंदियाँ रोज मिटती हैं

तुम लोगों ने क्या ठान लिया
खुद को पर्दों मे छुपा लिया
ऐलान किया मारो–मारो
फिर कहाँ ये गोलियां सुनती हैं
लव जिहाद हो या आतंकवाद
बस एक यही धर्म है अपना लिया

समझाया भीरू
कई बार कहा समझो भाई
प्रभु की समझो प्रभुताई
कुछ प्रीत करो इन्सानों से
मत डोलो अपने ईमानों से

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
गंगा, यमुना यहीं पर बहती है
काबा और काशी यहीं पर है
खुदाई यहीं पर बसती है

नहीं समझा तो मैं चिल्लाई
अपनों का खून बहाते हो
आजादी पाना चाहते हो
धर्म की आड़ मे अपनी बहनों को
विधवाकर
क्यों शांति तुम्हें मिलती है?

ये लहू बहे गर सीमा पर
गर चलें गोलियां सीमा पर
दुश्मन के छक्के छुड़ाए गर
आजादी तभी मिलती है

इंसान जो लहू पिया करते हैं
बहसी दानव कहलाते हैं
अपनी जानों को बचा रहे
क्या औरों की जाने सस्ती हैं

क्या धर्म यही सब कहते हैं
क्या संत यही सब कहते हैं
आतंकवाद या लव जिहाद की आड़ में
ये कहानी, कुछ और ही लगती है

पद्मा राय
प्रबंधक (पी.एस.), भा.वि.प्रा.

"हे मातृभूमि तेरे चरणों में सिर नवाऊ मैं, भक्ति भेंट अपनी तेरी शरण में लाऊं मैं, जीभा में गीत तेरा ही गाऊं मैं"

बोलो आओगी तुम !

कहानी लिखी है मैंने,
सुनने, बोलो आओगी तुम,

हो सकता है असहज लगे तुमको,
कैसे मैं तुम से बेहतर लिख सकता हूँ तुमको,
पर मैंने तुमसे ज्यादा जिया है तुमको,
बोलो सुनोगी तुम!

हाँ कहानी है, छोटी सी है,
ज्यादा समय नहीं लेगी तुम्हारा,
क्या पता मैं जो गुजरे पलों में ढूँढता हूँ,
मुझे तुम्हारी उस हँसी का मतलब मिल जाये,
बोलो दोगी तुम!

कहानी है सीधी सपाट,
कोई परतें नहीं है शब्दों में,
ना कोई नुकीला कोना,
जो चुभ जाये गले में कहते हुए,
ना कोई कंकर, जो धकेल दे अतीत में,
बोलो पढ़ोगी तुम!

कहानी है,
जिसमें तुम आगे बढ़ गयी,
और मैं, पीछे रह गया,
एक गाँव के सूने, ठहरे मील के पत्थर सा,
अंकित करता हमारी बढ़ती दूरियों को,
इस थम चुके सफर को एक नई राह देने,
बोलो आओगी तुम!

कहानी है,
जिसकी दीवारों को रंगा है मैंने अपने हिसाब से,
और बैठा हूँ जमीन पर तुम्हारे इंतजार में,
क्या आओगी तुम इसको छत देने,
ताकि ताउम्र मैं रह सकूँ इस कमरे में,
छुपाए अपने रंगों को!

कहानी लिखी है मैंने,
सुनने, बोलो आओगी तुम।

कमल किशोर आचार्य
अनुभाग अधिकारी, डीजीसीए

मेरी पुरानी डायरी में, आज तेरी तस्वीर मिल गई थी,
एक पल को मानो मुझे, मेरी तकदीर मिल गई थी।।

मानवीय प्रेरणा

मंदिर–मस्जिद–गिरिजाघर सब, ईश्वर की बुनियादें हैं?
उस ईश्वर को जन्म दे रहे! जिसने बाँटी यादें हैं?
मानवता के राष्ट्रगान में, किसने बोये काँटे हैं?
'ईश्वर' एक है, 'मानव' एक है, 'विश्व' एक फरियादें हैं।

राष्ट्र–धर्म की 'समझ' अगर है, फिर हमको बतलाओ तो,
'राष्ट्र' है क्या और 'धर्म' है क्या ? इस मानव को समझाओ तो!
'राष्ट्र' हमारा 'कर्म–क्षेत्र' है, 'धर्म' हमारा 'मानवता', चाह नियत है,
लक्ष्य नियत है, नीचे हो मिलती पशुता।

इस पशुता ने जकड़ लिया है, 'सही समझ' है चली गयी, सूरज के
सम्मुख अँधियारा, शब्द नहीं हैं, अर्थ नहीं! अस्तित्वहीन अँधियारे की,
यह बढ़ती जाती आयु है, क्या मानव का नष्ट हो गया, अत्युत्तम स्नायु है?

आशाओं से गगन ताकता, नीचे धरती झुलस रही, मानव कहता
मस्जिद तेरी, मंदिर मेरा, यहीं–यहीं। उन्नति नाम का अर्थ हुआ गुम,
धरती को भी निगल रहा, अन्धकार में चलता मानव, दावानल में पिघल रहा।

दिशाहीन है, लक्ष्यहीन भी, पर प्रतियोगी बना हुआ, काल बन रहा अथाह
समुन्दर, बहें विषैली हवा–धुँआ। दानवता कर रही हुकूमत, हरित–क्रांति
सब हुई दफा, शत्रु बना कर अविश्वास ने, दफन किये सम्मान–वफा।

समय जा रहा अब तो जागो,
वरना विनाश हो जाएगा, अश्कों से लथपथ होकर के,
'जीवन' भू से खो जाएगा। मानव को, मानव ही बनकर दानव,
इस भू पर खायेगा, सुविधाओं को ढाल बना, फिर 'मनु' भी ना बच पायेगा।

बस 'सही समझ' का आभूषण, इस पर विराम लगाएगा, संबंधों के पुष्प खिला,
वह जीवन को महकाएगा। 'बसुधैव–कुटुम्बकम' को अर्थपूर्ण, जब 'मानव' सत्य बनाएगा, दानव भी
मानव अर्थ भुना, तब 'दिव्य मनुज' कहलायेगा।

हो विजय सत्य की हे भगवन, नफरत–हिंसा के शूल कटें, जीवन हो
सुगम सर्वजन का, सब सुविधाएं अनुकूल बनें 'विश्वमित्र' करता
आवाहन, दानवता निर्मूल बने, सुदृढ़ बने आधार मनुज का,
'मानवता' एक फूल बने।

विश्वमित्र
उड़नयोग्यता अधिकारी, नागर विमानन महानिदेशालय

"सत्य अहिंसा प्रेम के दीपक दिल में तुम्हें जलाना होगा, मजहब की सलाखों की कैद से बाहर तुमको आना होगा, नवनिर्माण नव विकास के गीतों को फिर से तुम्हें गाना होगा, आर्यावर्त को विश्व का सिरमौर फिर से तुम्हें बनाना होगा।"

बागवान

उस जलजले का आना
मेरा सब कुछ लुट जाना
मैं तन्हा हो गई

मेरी गोद में तेरा आना
मातृत्व का सुख पाना
जैसे सुबह हो गई

मेरे आंचल की छांव
दिल में उम्मीदों का गांव
तू जान हो गई

तेरे लिए खुद को भुलाना
इस मुखड़े पे सब लुटाना
बस! मैं खो गई

वो घर का चलाना
तुझको पढ़ाना, मैं भूली जमाना
इक मशीन हो गई

मेरी मेहनत का रंग लाना
तेरा बढ़िया नौकरी में जाना
मैं साकार हो गई

तेरी शादी का होना
महका मेरे मन का कोना
मैं धन्य हो गई

फिर एक परिवर्तन सा आना
मेरा समझ न पाना
लगा जिन्दगी सो गई

घर का रंग–ढंग बदलना
सब अपनी मर्जी से करना
मैं सामान हो गई

मेरा बीमार होना–खांसना
रात को सो न पाना
मैं खलल हो गई

वो तेरा अहसास कराना
दवाई का बिल दिखाना
मैं पराई हो गई

लोरियों में लिपटी रातें
चंदा मामा की वो बातें
कहां खो गई

मेरी ममता बेअसर
तेरी रंगीनियां बेखबर
आंखिर क्यों हो गई

मुझसे तेरा यूं कतराना
कि मां भी न बुलाना
नाकारा जिस्म हो गई

तेरा फिर यूं रूठ जाना
मुझको वृद्धाश्रम दिखाना
जैसे शाम हो गई

क्या शाम मेरी इस तरह ढलेगी?
ए दिल संभल जा, अब मोहब्बत न छलेगी
अब और शर्मिंदा मेरी ममता न होगी
मेरे घर में अब मेरी भी जगह होगी

बेरूखी, बेबसी का दम, मैं और न भरूंगी
घर के कागजातों पर हस्ताक्षर नहीं करूंगी
अब मरने से पहले, मैं नहीं मरूंगी
मैं नहीं मरूंगी!!

ज्योतिका महाजन

**कोई मां बेटे को कभी भी यह नहीं कहती कि.....'मुझे सुखी रखना'
मां तो हमेशा इतना ही कहती है कि बेटा..... तू सदा सुखी रहना।**

माँ

तुम्हें क्या पता
उस झोपड़ी की चौखट पर,
जो वृद्ध महिला बैठी है
उसके साथ,
मेरा क्या रिश्ता है।
तुम तो मुझे देखते हो,
मेरे अंदर छिपी
उस तस्वीर को नहीं देखते,
जिसने मुझे,
यह पहचान दी,
तुम्हारे साथ बैठ पाने का,
इतना बड़ा मान दिया।

मैं,
उस वृद्धा की बात कर रहा हूं,
जो निरंतर
मेरे लौटने का,
इंतजार कर रही है,
इस विश्वास के साथ,
कि मैं आऊंगा
अपने हिस्से की रोटी,
मेरे लिए,
छुपा के रख रही है,
जिसकी कमजोर आंखें,
राह तकते थकती नहीं,
लाख समझाने पर भी,
जो समझती नहीं।

वह सीधी–सादी,
क्या जाने कि मैं,
बंट चुका हूं अब,
कई हिस्सों में,
कई खानों में।
धूमिल हो गई है,
मेरी संवेदना,
इस चका–चौंध के
तहखाने में।
(वह तो मुझे अपना
और बस, अपना समझती है)

उसकी कृष काया
अब ढलने लगी है,
फिर भी उसे
मेरी फिक्र पड़ी है,
सामने से गुजरते
हर किसी को
बेटा कह पुकारती है।

और जब,
लोग अनसुनी कर देते हैं
उसकी बात,
लाचार, बेबस वह
निःशब्द हो जाती है।

जब कोई नटखट बच्चा,
हंसी ठिठोली में,
उसे कह देता है–वो देखो,
तेरा बेटा आ रहा है।
भाव–विह्वल वह
खुद को रोक नहीं पाती है,
अपने संपूर्ण–सामर्थ्य, को,
उठ खड़े होने में लगा जाती है।
शक्तिहीन वह,
लाठी के सहारे भी,
संभल नहीं पाती है।
लड़खड़ाती है और फिर,
गिर जाती है।

कोई राह चलता राही उसे,
संभाल तो लेता है, पर
कोसता है कि
बुढ़िया पागल हो गई है।

कुछ नहीं कहती वह,
बस एकटक,
निहारती रहती है।
उसे बेटा कहती है
और पुनः,
उस दहलीज पर बैठकर,
अविरल इंतजार में,
खो जाती है।
क्योंकि, वह मां है– : मेरी माँ'।

धनन्जय शर्मा
अनुभाग अधिकारी, नागर विमानन मंत्रालय

**"फूल कभी दो बार नही खिलते, जन्म कभी दो बार नही मिलते,
मिलने को तो हजारो लोग मिल जाते हैं, पर हजारो गलतियां माफ करने वाले
मां बाप नहीं मिलते" ।।**

हवा में उड़ने के लिए

हवा में उड़ने के लिए परिंदा होना जरूरी नहीं
एक जोड़ी ख्वाब
जो डैनो की मानिंद उग जाए
आपकी रीढ़ से
तो भी आप अच्छी उड़ान भर सकते हैं।

हवा में उड़ने के लिए विमान की अंतड़ियों में
सीट बेल्ट लगा बैठना जरूरी नहीं
एक गलतफहमी भी आपको
इतना हल्का तो बना ही देगी
कि आप आसानी से हवा में उड़ सकें।

हवा में उड़ते वक्त कोई गंतव्य जरूरी नहीं
अपने को हवा के झोंकों के हवाले कर
किसी गुब्बारे की तरह इधर से उधर
हवा में तैरते हुए भी
आप उड़ने का मजा ले सकते हैं।

हवा में उड़ने के लिए हवा में होना जरूरी नहीं
जमीन पर रहते हुए
हवाई किले बनाते हुए
सपने देखते और दिखाते हुए भी
आप हवाबाजी का मजा ले सकते हैं।

संदीप कुमार
सहायक निदेशक
हिन्दी प्रभाग, नागर विमानन मंत्रालय

**मंजिलें, उन्हीं को मिलती हैं, जिनके सपनों में जान होती है,
सिर्फ पंखों से कुछ नहीं होता, दोस्तो, हौसले से उड़ान होती है।**

जादू

इस शब्द में समय
अपने हिसाब से अर्थ भरता रहा है
यह भी जरूरी नहीं कि
जिसे एक व्यक्ति के द्वारा जादू
कहा जा रहा हो
दूसरा भी कहे

अलस्सुबह उठकर
समय पूर्व घर से निकले
कामगार के लिए
ठीक वक्त पर बस मिल जाना
निर्धारित समय पर दफ्तर पहुँच जाना
उसके लिए जादू ही तो है

जादू ही तो है
जब चारों तरफ के कोलाहल को चीरकर
कामगार
बायोमेट्रिक पर अपनी उँगलियों
के निशान छोड़
समय की नब्ज को मापता है
समय पर
दफ्तर पहुँचने से
उसके चेहरे पर तैर गई
मुस्कान
जादू ही तो है

जादू ही तो है
जब बिना किसी तनाव के
गुजर जाता है दिन
जादू ही तो है
जब बॉस की डांट सुने बिना
सरक जाता है दिन
जादू ही तो है
जब सहकर्मियों की मीठी
चुगलियों को सुनते
फिसल जाता है दिन

जादू
कभी तिलिस्म रचता है
कभी खेल करता है
कभी भरने देता है कल्पना
की लंबी उड़ान
और कभी ला पटकता है
यथार्थ की नंगी दुनिया में
जहां हम और आप
खड़े हैं निहत्थे, निरुपाय

वैसे ही, जैसे
सीरियाई आतंक से त्रस्त
वहाँ के जवान, बूढ़े
औरतें गोद में बच्चा लिए

भटक रहे हैं दर–दर
पनाह की चाह में
खदेड़े जा रहे हैं बरबस
याद होगा आपको वह दृश्य
जिसमें गोद में बच्चा लिए एक बाप
हताश, डगमगाते कदमों से
लगभग लांघ ही चुका था
मानव के मध्य विभाजक रेखा को
और तभी वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा
कैमरे की आँखों ने दिखाया
कि कैसे एक महिला पत्रकार ने
उसके बढ़ते कदमों के बीच
लेंघी डाली थी

याद होगा आपको वह दृश्य
जिसमें एक बच्चे के
नन्हें पैरों ने
चलने से कर दिया था इंकार
गिरा और
छोड़ दिया गया उसे वहीं
विशाल समुद्र के किनारे
उसे जगह मिली
पनाह मिली
मीडिया में
सारी दुनिया में
उसके जाने के बाद
जादू???
अगर यह जादू है तो मुझे
इससे इनकार है।

डॉ. प्रदीप कुमार
वरिष्ठ अनुवादक (राजभाषा)
नागर विमानन मंत्रालय

**सपने कोई जादू के माध्यम से वास्तविकता नहीं बन जाते हैं,
ये पसीने, दृढ़ संकल्प और कठोर परिश्रम से वास्तविक बनते हैं।**

अमर बलिदानी चंद्रशेखर आजाद

चलो आज याद हम उनकी भी बात करें
पुष्प आज उनके भी चरणों में रखिए
जिनकी वजह से मेरे भारत का मान बढ़ा
होलियों के साथ याद गोलियों को रखिए
पहने मातृभारती का प्रेम नाम चोला
रंग दे बसंती वाला आन याद रखिए
भगत, राजगुरु, सुखदेव को सलाम मेरा
शेखर के जैसी नौजवानी याद रखिए

शेखर पर क्या गान लिखूं मैं
वह आजादी के नायक थे
दुश्मन को मुट्ठी पर मल दें
भारत के बेटे लायक थे
मेरे लिए वह देवसरीखे
एक हाथ बंदूक लिए
और वक्ष में डाल जनेऊ
आजादी की भूख लिए
तो मुझे तो उनमें राम दिखते
और भोले का तांडव दिखता
सत्य के खातिर लड़ने वाला
एक–एक पांडव दिखता
उसने भारत के दुश्मन को
प्याला विष का पिला दिया
भारत मां के वीर लाल ने
अंग्रेजों को हिला दिया

प्रीति वर्मा
तकनीशियन, (पवन हंस लिमिटेड)

लड़े जंग वीरों की तरह, जब खून खौल फौलाद हुआ।
मरते दम तक डटे रहे वो, तब ही तो देश आजाद हुआ।।

“अगर हमें
हिंदुस्तान को
एक राष्ट्र बनाना
है तो राष्ट्रभाषा हिंदी
ही हो सकती है”

– महात्मा गांधी

Concept & Designed by
Nirman Advertising Pvt. Ltd.
Ph.: +91-11-24328510/11